है, परिणामी तथा दुःखदायी है । आत्मानन्द, महान, शाश्वत और अखण्ड सुख का दाता है। जन्म मरण के चक्कर से छूटने के हेतु, विषयानन्द की इच्छा मात्र का त्याग करके आत्मानन्द का अभिलाषी बने और उसके लिये प्रयत्न करे तथा मन और इन्द्रियों के विषयों का त्याग करके मन और इन्द्रियों को स्वाधीन करके आत्मा में लगादे।

अतएव बुद्धिमान पुरुषों को यह समझ रखना चाहिये कि अनन्त युगों से भटकते हुए अनन्त कोटि के जीवों में जो अत्यन्त ही भाग्यशाली और मुक्ति के अधिकारी समझे जाते हैं उन्हीं को यह दुर्लभ मुक्ति दायक मनुष्य शरीर प्राप्त होता है। ऐसे दुर्लभ क्षण भंगुर अनित्य मनुष्य शरीर को पाकर जो जीव शीघ्र से शीघ्र अपनी आत्मा के कल्याण के लिये तत्पर नहीं होता उसके समान मूर्ख कोई भी नहीं। जब मनुष्य का शरीर मिल गया तब यह समझ लेना चाहिए कि साक्षात्‌ भाव से मुक्ति के अधिकारी तो हम हैं ही, ऐसा न होता तो हमें मनुष्य शरीर ही क्यों दिया जाता इस अधिकार को पाकर भी यदि हम उस दयामयी की अवहेलना कर अपने समय को व्यर्थ भोग प्रमाद और आलस्य में बितावें तो बड़ी मूर्खता के अतिरिक्त और क्या कहा जाय। प्रतिक्षण अपने लक्ष्य पर तत्परता से प्रयत्न करके अपने ध्येय की सिद्धि कर लेवें, नहीं तो पीछे बड़ा भारी पश्चाताप करना पड़ेगा।

भगवत भक्ति का मार्ग ज्ञानयोग कर्मयोग आदि सभी साधनों की अपेक्षा, सरल और सुगम होने से बालक, वृद्ध, स्त्री; शूद्रादि सभी के लिये सुगम है। इन श्लोकों के सार भगवत भक्तों और सन्त शास्त्रों के आधार पर लिखे हुए हैं।

॥ ॐ ॥

ॐकारं बिन्दु संयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ।
कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः ॥

विश्व कल्याण

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात
सर्वस्तरतु दुर्गाणि सर्वो भद्राणि पश्यतु
सर्वः सर्वं माप्नोति सर्वः सर्वत्र नन्दतु ।

सब सुखी हों, सब आरोग्य हों, सबका कल्याण हो, कोई दुःखी न हो, सब दुःखों से पार हों सब कल्याण को देखें, सबको सब कुछ प्राप्त हो, सब सभी जगह आनन्दित रहें ।

राम झरोखे बैठ के, सबका मुजरा लेय ।
जैसी जिसकी भावना, वैसा ही फल देय ॥

मेरी भावना

१. जिसने राग द्वेष कामादिक, जीते, सब जग जान लिया ।
सब जीवों को मोक्ष मार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया ॥
बुद्ध वीर, जिन हरिहर, ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो ।
भक्ति भाव से प्रेरित हो यह, चित्त उसी में लीन रहो ॥

२. विषयों की आशा नहिं जिनके, साम्य भाव धन रखते हैं ।
निज पर के हित साधन में जो, निशदिन तत्पर रहते हैं ॥
स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं ।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के दुख समूह को हरते हैं ॥

३. नित्य रहे सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे ।
उनही जैसी चर्या में, यह चित्त सदा अनुरक्त रहे ॥
नहीं सताऊँ किसी जीव को, झूठ कभी नहिं कहा करूँ ।
परधन वनिता पर न लुभाऊँ, सन्तोषामृत पिया करूँ ॥

४. अहंकार का भाव न रक्खूँ, नहीं किसी पर क्रोध करूँ ।
देख दूसरों की बढ़ती को, कभी न ईर्ष्या भाव धरूँ ॥
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य व्यवहार करूँ ।
बने जहाँ तक इस जीवन में, औरों का उपकार करूँ ॥

५. मैत्री भाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहे ।
दीन दुखी जीवों पर मेरे, उरसे करुणा स्रोत बहे ॥
दुर्जन क्रूर कुमार्गी जन पर, क्षोभ नहीं मुझको आवे ।
साम्य भाव रक्खूँ मैं उन पर, ऐसी परिणति हो जावे ॥

६. गुणी जनों को देख हृदय में, मेरे प्रेम उमड़ आवे।
बने जहाँ तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे॥
होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे।
गुण ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे॥

७. कोई बुरा कहे या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे।
लाखों वर्षों तक जीऊँ या, मृत्यु आज ही आ जावे॥
अथवा कोई कैसा ही भय, या लालच देने आवे।
तो भी न्याय मार्ग से मेरा, कभी न पग डिगने पावे॥

८. होकर सुख में मग्न न फूलें, दुख में कभी न घबरावें।
पर्वत नदी श्मशान भयानक, अटवी से नहिं भय खावें॥
रहे अडोल अकम्प निरन्तर, यह मन दृढ़तर बन जावे।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग में, सहनशीलता दिखलावे॥

९. सुखी रहें सब जीव जगत में, कोई कभी न घबरावे।
बैर भाव अभिमान छोड़ जग, नित्य नये मंगल गावे॥
घर घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृति दुष्कर हो जावे।
ज्ञान चरित उन्नत कर अपना, मनुज जन्म फल सब पावें॥

१०. ईति भीति व्यापे नहिं जग में, वृष्टि समय पर हुआ करे।
धर्मनिष्ठ होकर राजा भी, न्याय प्रजा का किया करे॥
रोग, मरी, दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शान्ति से जिया करे।
धर्म अहिंसा धर्म जगत में, फैले सब हित किया करे॥

११. फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर ही रहा करे।
अप्रिय कटु कठोर शब्दों को, कभी न कोई कहा करे॥
बनकर सब युग वीर हृदय में, देशोन्नति रत रहा करे।
वस्तु स्वरूप विचार खुशी से, सब दुख संकट सहा करे॥

❀ जवानी, धन, सम्पत्ति, प्रभुता और अज्ञानता इनमें से प्रत्येक अनर्थकारी है जहां ये चारों एकत्र हों वहां की बात न पूछिये।

❀ हरिण श्रवण के विषय सुख से, हाथी स्पर्शेन्द्रिय के विषय सुख से, पतंग नेत्र के विषय सुख से, भौंरा नाक के विषय सुख से और मछली जीभ के विषय सुख से नाश हो जाती है तो जो एक ही मनुष्य इन पांचों विषयों का सेवन करता होगा वह बेमौत क्यों न मरता होगा।

❀ शिक्षा देने वाले गुरु ऊपर से तो तलवार की धार जैसे तीक्ष्ण और काले भुजंग जैसे भयानक दिखते हैं परन्तु उनका हृदय दाख की तरह नरम और मधुर रहता है।

❀ गुरु और कुम्हार एक ही प्रकार के होते हैं, जिस प्रकार हंडी बराबर करने के लिये कुम्हार ऊपर से चोट लगाता है परन्तु भीतर से हाथ द्वारा उसकी रक्षा करता जाता है, इसी प्रकार गुरु ऊपर से कठोर रहते हैं परन्तु हृदय से जिसे शिक्षा देते हैं उसका भला ही चाहते हैं।

❀ जिनकी भुजाओं के बल की सहायता से इन्द्र बने हुए हैं सारे राजा जिसका रुख देखते रहते हैं वह स्त्री के क्रोध को सुनकर सूख गया यह कामदेव के प्रताप की बड़ाई है जिस शरीर के छेदने में शूल घन और तलवार हार मान गई वह शरीर कामदेव के पुष्प बाण से मारा जाता है।

❀ नीच पुरुष पराये काम को बिगाड़ना जानता है पर बनाना नहीं जानता वायु वृक्ष को उखाड़ सकती है पर वह जमा नहीं सकती।

❀ बुद्धिमान मनुष्य अपने धन और प्राण को पराये के लाभ के लिये त्याग देते हैं, क्योंकि इनका नाश तो कभी होगा ही। इसलिये परोपकार में ही इनका त्यागना श्रेष्ठ है।

❀ इस परिवर्तन शील संसार में, मरकर सभी जन्म लेते हैं परन्तु जन्म होना उसी का सार्थक है जिसके जन्म से वंश की गौरव वृद्धि हो।

❀ विद्वान मनुष्य के मुँह से सहसा कोई बात नहीं निकलती और यदि निकलती है तो उसी प्रकार फिर नहीं लौटती जैसे हाथी के दाँत बाहर निकलने के पश्चात फिर भीतर नहीं जाते।

❀ कोई काम कैसा ही अच्छा या बुरा क्यों न हो काम करने वाले बुद्धिमान को पहले उसके परिणाम का विचार करके ही काम में हाथ लगाना चाहिये, क्योंकि बिना विचारे अति शीघ्रता से किये हुए काम का फल मरण काल तक हृदय को जलाता और काँटे की तरह खटकता रहता है।

❀ हे भौंरे, बसन्त के आते ही जब आम में मंजरियाँ खिल उठीं तब तो तूने उसके चारों ओर मंजु मंजु गुंजार करते हुए खूब मजा लिया। अब दैववशात् आम के वृक्ष के कृश हो जाने, पुष्प विहीन हो जाने पर यदि तू उससे प्रेम न रक्खेगा तो तुझ से बढ़कर नीच कौन होगा।

❀ नीति निपुण मनुष्य निन्दा करें चाहे स्तुति करें लक्ष्मी आवे अथवा स्वेच्छानुसार चली जावे चाहे आज ही मृत्यु हो जावे या युगान्तर में हो किन्तु धीर मनुष्य न्याय मार्ग से एक कदम भी विचलित नहीं होते।

❀ सत्पुरुषों को यह तलवार की धार जैसा कठिन व्रत किसने बताया है, जो प्राण जाने पर भी मलीन या पाप कर्म नहीं करते, किन्तु न्यायोपार्जित आजीविका ही जिनको प्रिय है, वे दुष्टों से या अल्प धन वाले सज्जनों से भी याचना करना जानते ही नहीं। ज्यों-ज्यों विपत्ति आती है त्यों-त्यों वे धीरतर होते हुए सदा उच्च पद के ही विचार करते और उच्चता के अनुरागी बनते जाते हैं।

❀ त्रैलोक्य के राज्य पर लात मारना स्वर्ग साम्राज्य का परित्याग करना एवं इनसे भी बढ़कर कोई वस्तु हो तो उसे भी परित्याग करना मुझे स्वीकार है। परन्तु सत्य से विलग होना मुझे कदापि स्वीकार नहीं हो सकता। पृथ्वी,जल,वायु,ज्योति, सूर्य, अग्नि ये सब अपने गुण और प्रकृति को चाहे छोड़ दें परन्तु मैं सत्य को किसी भी प्रकार न छोड़ूँगा।

❀ केवल अच्छे वेश को देखकर मूढ़ लोग धोका खा जाते हैं चतुर लोग नहीं। अच्छे भले वेषधारियों में क्या दुर्गुण है इनके लिये मोर को देखो, दिखने में कितना सुन्दर है किन्तु ये सब होते हुए भी उसका भोजन सांप है, अर्थात् वह ऐसे कठोर हृदय वाला है जो जीवित सर्प को भी खा जाता है।

❀ सेवक चुप रहता है तो स्वामी उसे गूंगा बोलता है, बकवादी पास रहता है तो ढीठ, दूर रहता है तो मूर्ख, सहनशील है तो डरपोक, नहीं सहता तो उसे नीच कुल का कहता है। मतलब यह है कि सेवा
है, योगियों के लिये यह अगम्य है।

पर की जाती है, पुण्य पुरुषों की प्रशंसा उनके मरने के पश्चात् की जाती है।

❀ दुराचारिणी स्त्री लज्जावती होती है, खारा जल ठंडा होता है, पाखंडी ज्ञानी बनता है और धूर्त लोकप्रिय बोलने वाले होते हैं।

❀ यद्यपि मनुष्य को कर्म के अनुसार फल मिलता है और बुद्धि कर्मानुसार होती है, फिर भी प्रत्येक काम सोच समझकर करना चाहिये।

❀ सब जगह गुणों की ही पूजा होती है पिता या वंश की पूजा नहीं होती जैसे लोग वासुदेव को तो नमस्कार करते हैं, परन्तु वासुदेव के पिता वसुदेव को नमस्कार नहीं करते।

❀ बड़प्पन जन्म के कारण नहीं होता किन्तु गुणों के कारण होता है जिसमें अधिक गुण है वही बड़ा माना जाता है, जैसे दूध, दही, घी इन तीनों में से घी का गौरव है। यद्यपि घी का जन्म दही से दही का जन्म दूध से है।

❀ ऐश्वर्य का भूषण सज्जनता है, शूरता का भूषण वाणी पर संयम रखना है। ज्ञान का भूषण शांति है। शास्त्राध्ययन का भूषण विनय है धन का भूषण सुपात्र को दान देना है तप का भूषण क्रोध रहित होना, प्रभुता का भूषण क्षमा है और धर्म का भूषण सरलता अथवा निष्काम रहना है, किन्तु जो दूसरे सब गुणों का कारण है—वह शील सर्वोत्तम भूषण है।

❀ जिसके हृदय को स्त्रियों के कटाक्ष बाण नहीं बेधते जो क्रोधाग्नि के ताप से नहीं जलता और इन्द्रियों के विषय

योग जिसके चित्त को लोभपाश में बांधकर नहीं खींचते वह धीर पुरुष तीनों लोकों को अपने वश में कर लेता है।

❀ विपत्ति के समय में धैर्य, ऐश्वर्यकाल में क्षमा, सभा में वाक्य चातुरी, संग्राम में पराक्रम, सुयश में अभिरुचि और शास्त्रों में व्यसन, ये गुण महापुरुषों में स्वभाव से होते हैं।

❀ जिस मनुष्य ने पूर्व जन्म मे बहुत सुकृत किये हैं उसके लिये भयानक वन भी नगर के समान सुखदायी हो जाता है और सारी पृथ्वी ही उसके लिये रत्नपूर्ण हो जाती है।

❀ सुन्दर आकृति, उत्तम कुल, शील, विद्या और हर प्रकार से की गई सेवा फल देने वाली नहीं होती किन्तु पूर्व जन्म के कर्म ही समय पर उसी प्रकार फल देते हैं जिस तरह वृक्ष समय पर देता है।

❀ जिस देश अथवा स्थान में रहकर अपने पराक्रम से अनेक भोग भोगे हैं उस देश या स्थान में वैभव हीन होकर रहने वाला नीच है।

❀ कमल और जोंक की उत्पत्ति एक ही जल से एक ही साथ होने पर भी दोनों के गुणों मे बहुत भिन्नता है।

❀ जो नम्रता से ऊँचे होते हैं, दूसरे के गुणों का वर्णन करके अपने गुण प्रसिद्ध करते हैं, हृदय से पराया भला करके अपना भी मतलब बना लेते हैं और निन्दा करने वाले दुष्टों को अपनी क्षमा शीलता से ही दूषित करते रहते हैं, ऐसे आश्चर्यकारी आचरण वाले सभी के माननीय श्रेष्ठ लोग संसार में किसके पूजनीय नहीं होते।

❀ मिलत एक दारुण दुख देही, बिछुरत एक प्राण हर लेही। एक तो ऐसे होते हैं जो मिलकर दुःख देते हैं और एक ऐसे होते हैं जिनका वियोग प्राण लेने वाला हो जाता है।

❀ ईर्षा करने वाला, घृणा करने वाला, सदा असन्तुष्ट रहने वाला, क्रोध करने वाला, संदेह में डूबा रहने वाला और दूसरे के भाग्य के सहारे जीने वाला, ये छहों सदा दुःखी रहते हैं।

❀ जिस पुरुष में समस्त जगत का कल्याण करने वाला शील है, उसके लिये अग्नि जल के समान, समुद्र छोटी नदी के समान, सुमेरु पर्वत छोटी सीमा के समान और सिंह उसके आगे हरिण सा तथा विष अमृत के गुण वाला हो जाता है।

❀ बाघ सिंह वाले वन में वृक्ष के नीचे रहकर पत्र और फल खाकर, पानी पीकर, घास पर सोकर और वृक्षों की छाल पहनकर चाहे जीवन व्यतीत करना सम्भव हो, परन्तु धनहीन दशा में बन्धुओं के बीच जीवित रहना सम्भव नहीं।

❀ हंस पर बहुत नाराज होकर विधाता उसके निवास और विलास का कमल वन तो नष्ट कर सकता है परन्तु उसकी दूध और पानी को अलग करने की चतुराई की कीर्त्ति नष्ट करने में समर्थ नहीं है।

❀ देवता का द्रव्य और गुरु का द्रव्य जो हरता है और पर स्त्री से संग करता है और सब प्राणियों में निर्वाह कर लेता है वह विप्र चांडाल कहलाता है।

- विभूति चंचल है, यौवन क्षण भंगुर है और जीवन काल के दाँतों में है, तो भी लोग परलोक साधन की उपेक्षा करते हैं। मनुष्यों का यह ढंग विस्मयकारी है।

- जब तक शरीर रूपी गृह, स्वस्थ है वृद्धावस्था दूर है इन्द्रियों की शक्ति मारी नहीं गई है और आयु नष्ट नहीं हुई है, तब तक बुद्धिमान को आत्मा के कल्याण का पूरा प्रयत्न कर लेना चाहिये। जब ये बातें न रहेंगी तब आत्म-कल्याण के लिये प्रयत्न करना वैसा ही निरर्थक होगा जैसा निरर्थक प्रदत्त घर में आग लगने पर कुआ खोदने का होता है।

- जिस परमेश्वर से सम्पूर्ण प्राणियों की उत्पत्ति हुई है और जिससे यह समस्त जगत व्याप्त है उस परमेश्वर की अपने स्वाभाविक कर्मों द्वारा पूजा करके मनुष्य परम सिद्धि को पा लेता है।

- नदियाँ स्वयम् जल नहीं पीती वृक्ष स्वयं फल नहीं खाते तथा मेघ अपने लिये नहीं बरसते सज्जनों की सम्पत्ति परोपकार के लिये ही होती है।

- जो लक्ष्मी कमल रूपी अपने घर में भी केवल शाम तक रहती है वह दूसरे के घर में अधिक दिनों तक कैसे ठहर सकती है।

- जिन लोगों में न विद्या है न तप है न दान है न गुण है और न धर्म है वे संसार में पृथ्वी पर भार रूप होकर मनुष्य रूप में मृग से फिर रहे हैं।

- मनुष्य से श्रेष्ठ दूसरा कोई कहीं किसी लोक में नहीं, धरा कर्म भूमि है और यहाँ भी केवल मनुष्य योनि ही कर्म है देवता भी कर्म करना चाहें तो उन्हें बराबर मनुष्य बनकर करना पड़ता है।

विचार-शक्ति

संसार में जिधर दृष्टि डालते हैं, उधर ही अशान्ति, भय, दुःख, रोग, शोक की पीड़ित ध्वनि सुनाई देती है।

मित्रो, क्या कभी विचार किया है कि इन सब बातों का हमारे पास कोई रामबाण उपाय है? जिसके द्वारा हम ईश्वरीय सहायता प्राप्त कर इनसे छुटकारा पा सकें और अपने जीवन को सुखमय बना सकें। यदि आप इस पर विचार करेंगे तो आपको यही उत्तर मिलेगा कि है, अवश्य है। विचारों में ही बड़ी प्रबल शक्ति है। विचार शक्ति की गति की तुलना विद्युत अथवा प्रकाश की गति के प्रवाह के साथ करें, तो आपको विदित होगा कि प्रकाश-शक्ति का प्रवाह एक सेकंड में (आकाश तत्व द्वारा) १८६००० मील पर पहुँच सकता है, परन्तु विचार शक्ति की गति का प्रवाह चार हजार से लगाकर आठ पद्म मील पर्यंत एक सेकंड में जा सकता है। विचार की लहरें होती हैं और विचार एक स्थान से दूसरे स्थान तक ईथर द्वारा बिना किसी रोक-टोक के जा सकता है।

हमारी कल्पना-शक्ति, एकाग्रता और इच्छा शक्ति पर ही विचार-शक्ति का प्रवाह निर्भर है। इनके बिना मिले विचार में कम्पन उत्पन्न नहीं हो सकता। मनुष्य जिस प्रकार विचार करता है, उसी प्रकार के विचारों को अपनी ओर आकर्षित करता है, वैसा ही बन जाता है, संसार में सुख, शान्ति, आरोग्य, भ्रातृभाव और प्रेम के शब्द-परमाणुओं को फैलाने के लिए ऐसा आध्यात्मिक शान्ति-मंडल स्थापित करना चाहिये, जिससे दरिद्रता, व्याधि, रोग, शोक, कलह, लड़ाई, झगड़े और अशान्ति का दूषित वायु मंडल नष्ट होकर शान्ति, भ्रातृभाव और प्रेम का साम्राज्य हो।

शिथिल करने से शान्ति नहीं मिलती, परन्तु सच्ची शान्ति
मन को शिथिल करने से होती है। मन को जगत और जगत
के विचारों से खींचकर अन्तर्मुख करो। एक शब्द पवित्र ले
लो और उसी पर विचार स्थिर करो। दृढ़ विचार करो कि
अपने मन में पवित्रता के सिवाय अन्य कोई विचार न आने
दूंगा। विचार करो पवित्रता क्या है? मन, वचन, कर्म से
पवित्र करने का संकल्प करो। अपने ध्यान को इधर-उधर मत
जाने दो और निरीक्षण करो कि तुम अपने चित्त को किस
प्रकार कितनी देर तक जमाये रख सकते हो।

एकाग्र एक बहुत आसान चीज है। हम सब संसार के
लोग इसका नित्य अभ्यास करते हैं। जिस काम को हमें करना
हो, उसके सिवाय दूसरे काम पर हम विचार नहीं कर सकते।
सिलसिलेवार सद्गुणों पर मन एकाग्र करने से अनेक पवित्र
गुण मनुष्य के जीवन के अंग बन सकते हैं। हृदय में ध्यान
करो, हृदय एक बड़े रहस्य का दृश्य है। पहले साधक को,
वक्षस्थल और उदर के बीच में जो गोलक है, उसके भीतर ही
हृदय को मानकर ध्यान धारण करना चाहिये।

शास्त्रों में हृदय ही परमात्मा का वास स्थान बताया
गया है और सभी सन्तों ने हृदयस्थ ईश्वर की शरण में
जाने का उपदेश दिया है, अतः हृदय ही में भगवान की
उपासना और प्राप्ति का स्थान है। ईश्वर ही प्राप्ति का अक्षय
भण्डार है। सब दशाओं में हमें उसे पुकारना चाहिये। उसी
पर निर्भर रहना चाहिये। उसी से प्रार्थना करनी चाहिये।
प्रार्थना से सब कार्य सिद्ध होते हैं।

प्रार्थना में महान शक्ति है। प्रतिदिन प्रत्येक स्त्री-पुरुष
को भगवान से अवश्य प्रार्थना करनी चाहिये। उस समय दिल

खोलकर उस महाप्रभु से प्रार्थना करो जो तुम्हारे रोम रोम में रम रहा है। उससे अपनी प्रत्येक शुभ इच्छा प्रगट करो और जो कुछ मांगना हो, उससे मांगो। वह तुम्हारी प्रत्येक शुभ इच्छा को अवश्य पूर्ण करेगा। सच्ची श्रद्धा और विश्वास युक्त प्रार्थना से हृदय में शान्ति की धारा और आत्मा में आनन्द की वृद्धि होगी। थोड़े काल के अभ्यास से ही तुमको अनुभव होगा कि तुम्हारे जीवन में दिन प्रतिदिन कितना शुभ परिवर्तन हो रहा है।

प्रार्थना करने वाले का चरित्र शुद्ध होना चाहिये। उसे सब व्यसनों से मुक्त होना और उसकी जीवन-चर्या शुद्ध और सात्विक होनी चाहिये। सेवा परायणता उसके जीवन का मंत्र हो। उसके जीवन में किसी बात की कमी न होगी। उसके द्वारा अनेक कल्याण होगा। मानसिक और बौद्धिक उन्नति के लिये आध्यात्म ज्ञान और सरल साधन जानने के लिये ही यह प्रार्थना की जाती है।

प्रार्थना एकाग्र चित्त होकर चुपचाप नेत्र मूंदे हुये सूर्योदय के पूर्व ब्रह्म मुहूर्त में उठकर नित्य नियमित रूप से घंटा, आधा-घंटा जितना समय इसमें दे सको, करनी चाहिये।

इसी प्रकार रात्रि को सोते समय भी करना चाहिये। जो मनुष्य परोपकारी, चरित्रवान एवं प्रबल धारणा शक्ति वाले और निष्काम हैं, उनकी प्रार्थना कभी निष्फल नहीं जाती। वे प्रत्यक्ष फल प्राप्त कर सकते हैं।

ध्यान

मैं आरोग्यता, प्रेम, सुख, शान्ति और भ्रातृ-भाव के विचारों की लहरें सारे विश्व की मनुष्य जाति, प्राणि मात्र के लिए मित्रों और स्नेहियों के लिये भेजता हूँ।

रोगी जन निरोग हों, अशक्त जन, शक्तिशाली हों। निर्धन और गरीब, धनवान और सुखी हों। निर्दयी और कृपण दयावान दातार हों।

दुराचारी और अपवित्र, सदाचारी तथा पवित्र हों। दुर्जन सज्जन हों। सज्जन और भक्त जनों को शान्ति प्राप्त हो और उनके कष्ट निवारण हों।

आत्म ज्ञानी पुरुष संसार के बन्धन से मुक्त हों और जीवन मुक्त होकर दूसरों को बन्धन से मुक्त करें। विश्व के समस्त प्राणी सुखी हों, अभय हों, रोग रहित हों और उनका कल्याण हो। किसी भी प्राणी को दुःख न हो। ज्ञानवान के ज्ञान का, धनवान के धन का, शक्तिवान की शक्ति का संसार में सदुपयोग हो। मैं सब प्राणियों को क्षमा करता हूँ और वे मुझे क्षमा करें। सब लोगों में मैत्री भाव उत्पन्न हो, संसार में मेरा कोई द्वेषी नहीं है। मैं प्रत्येक जीव में परमात्मा के दर्शन करता हूँ। जिस किसी में सौन्दर्य की प्रभा का प्रकाश है, वह परमात्मा की ही प्रभा है। समस्त विश्व में सुख, परस्पर प्रेम और भ्रातृ-भाव का साम्राज्य स्थापित हो।

खोलकर उस महाप्रभु से प्रार्थना करो जो तुम्हारे रोम रोम में रम रहा है। उससे अपनी प्रत्येक शुभ इच्छा प्रगट करो और जो कुछ माँगना हो, उससे माँगो। वह तुम्हारी प्रत्येक शुभ इच्छा को अवश्य पूर्ण करेगा। सच्ची श्रद्धा और विश्वास युक्त प्रार्थना से हृदय में शान्ति की धारा और आत्मा में आनन्द की वृद्धि होगी। थोड़े काल के अभ्यास से ही तुमको अनुभव होगा कि तुम्हारे जीवन में दिन प्रतिदिन कितना शुभ परिवर्तन हो रहा है।

प्रार्थना करने वाले का चरित्र शुद्ध होना चाहिये। उसे सब व्यसनों से मुक्त होना और उसकी जीवन-चर्या शुद्ध और सात्विक होनी चाहिये। सेवा परायणता उसके जीवन का मंत्र हो। उसके जीवन में किसी बात की कमी न होगी। उसके द्वारा अनेक कल्याण होगा। मानसिक और बौद्धिक उन्नति के लिये आध्यात्म ज्ञान और सरल साधन जानने के लिये ही यह प्रार्थना की जाती है।

प्रार्थना एकाग्र चित होकर चुपचाप नेत्र मूंदे के पूर्व ब्रह्म मुहूर्त में उठकर नित्य नियमित रूप से घंटा, घटा जितना समय इसमें दे सको, करनी चाहिये।

इसी प्रकार रात्रि को सोते समय भी करना जो मनुष्य परोपकारी, परिश्रमवान एवं प्रदत्त और निष्काम है, उनकी प्रार्थना कभी निष्फल वे प्रत्यक्ष फल प्राप्त कर सकते हैं।

ध्यान

मैं आरोग्यता, प्रेम, सुख, शान्ति और भ्रातृ-भाव के विचारों की लहरें सारे विश्व की मनुष्य जाति, प्राणि मात्र के लिए मित्रों और स्नेहियों के लिये भेजता हूँ।

रोगी जन निरोग हों, अशक्त जन, शक्तिशाली हों। निर्धन और गरीब, धनवान और सुखी हों। निर्दयी और कृपण दयावान दातार हों।

दुराचारी और अपवित्र, सदाचारी तथा पवित्र हों। दुर्जन सज्जन हों। सज्जन और भक्त जनों को शान्ति प्राप्त हो और उनके कष्ट निवारण हों।

आत्म ज्ञानी पुरुष संसार के बन्धन से मुक्त हों और जीवन मुक्त होकर दूसरों को बन्धन से मुक्त करें। विश्व के समस्त प्राणी सुखी हों, अभय हों, रोग रहित हों और उनका कल्याण हो। किसी भी प्राणी को दुःख न हो। ज्ञानवान के [illegible], धनवान के धन का, शक्तिवान की शक्ति का संसार में [illegible] हो। मैं सब प्राणियों को क्षमा करता हूँ और वे [illegible]। सब लोगों में मैत्री भाव उत्पन्न हो, संसार [illegible] कोई द्वेषी नहीं है। मैं प्रत्येक जीव में परमात्मा के [illegible] करता हूँ। जिस किसी में सौन्दर्य की प्रभा का प्रकाश है, [illegible] की ही प्रभा है। समस्त विश्व में सुख, परस्पर भ्रातृ-भाव का साम्राज्य स्थापित हो।

खोलकर उस महाप्रभु से प्रार्थना करो जो तुम्हारे रोम रोम में रम रहा है। उससे अपनी प्रत्येक शुभ इच्छा प्रगट करो और जो कुछ माँगना हो, उससे माँगो। वह तुम्हारी प्रत्येक शुभ इच्छा को अवश्य पूर्ण करेगा। सच्ची श्रद्धा और विश्वास युक्त प्रार्थना से हृदय में शान्ति की धारा और आत्मा में आनन्द की वृद्धि होगी। थोड़े काल के अभ्यास से ही तुमको अनुभव होगा कि तुम्हारे जीवन में दिन प्रतिदिन कितना शुभ परिवर्तन हो रहा है।

प्रार्थना करने वाले का चरित्र शुद्ध होना चाहिये। उसे सब व्यसनों से मुक्त होना और उसकी जीवन-चर्या शुद्ध और सात्विक होनी चाहिये। सेवा परायणता उसके जीवन का मंत्र हो। उसके जीवन में किसी बात की कमी न होगी। उसके द्वारा अनेक कल्याण होगा। मानसिक और बौद्धिक उन्नति के लिये आध्यात्म ज्ञान और सरल साधन जानने के लिये ही यह प्रार्थना की जाती है।

प्रार्थना एकाग्र चित्त होकर चुपचाप नेत्र मूंदे हुये सूर्योदय के पूर्व ब्रह्म मुहूर्त में उठकर नित्य नियमित रूप से घंटा, आधा-घंटा जितना समय इसमें दे सको, करनी चाहिये।

इसी प्रकार रात्रि को सोते समय भी करना चाहिये। जो मनुष्य परोपकारी, चरित्रवान एवं प्रबल धारणा शक्ति वाले और निष्काम हैं, उनकी प्रार्थना कभी निष्फल नहीं जाती। वे प्रत्यक्ष फल प्राप्त कर सकते हैं।

—

ध्यान

मैं आरोग्यता, प्रेम, सुख, शान्ति और भ्रातृ-भाव के विचारों की लहरें सारे विश्व की मनुष्य जाति, प्राणि मात्र के लिए मित्रों और स्नेहियों के लिये भेजता हूँ।

रोगी जन निरोग हों, अशक्त जन, शक्तिशाली हों। निर्धन और गरीब, धनवान और सुखी हों। निर्दयी और कृपण दयावान दातार हों।

दुराचारी और अपवित्र, सदाचारी तथा पवित्र हों। दुर्जन सज्जन हों। सज्जन और भक्त जनों को शान्ति प्राप्त हो और उनके कष्ट निवारण हों।

आत्म ज्ञानी पुरुष संसार के बन्धन से मुक्त हों और जीवन मुक्त होकर दूसरों को बन्धन से मुक्त करें। विश्व के समस्त प्राणी सुखी हों, अभय हों, रोग रहित हों और उनका कल्याण हो। किसी भी प्राणी को दुःख न हो। ज्ञानवान के ज्ञान का, धनवान के धन का, शक्तिवान की शक्ति का संसार में सदुपयोग हो। मैं सब प्राणियों को क्षमा करता हूँ और वे मुझे क्षमा करें। सब लोगों में मैत्री भाव उत्पन्न हो, संसार में मेरा कोई द्वेषी नहीं है। मैं प्रत्येक जीव में परमात्मा के दर्शन करता हूँ। जिस किसी में सौन्दर्य की प्रभा का प्रकाश है, वह परमात्मा की ही प्रभा है। समस्त विश्व में सुख, परस्पर प्रेम और भ्रातृ-भाव का साम्राज्य स्थापित हो।

सोचकर उस महाप्रभु से प्रार्थना करो जो तुम्हारे रोम रोम में रम रहा है। उससे अपनी प्रत्येक शुभ इच्छा प्रगट करो और जो कुछ माँगना हो, उससे माँगो। वह तुम्हारी प्रत्येक शुभ इच्छा को अवश्य पूर्ण करेगा। सच्ची श्रद्धा और विश्वास युक्त प्रार्थना से हृदय में शान्ति की धारा और आत्मा में आनन्द वृद्धि होगी। थोड़े काल के अभ्यास से ही तुमको अनुभव गा कि तुम्हारे जीवन में दिन प्रतिदिन कितना शुभ परिवर्तन रहा है।

प्रार्थना करने वाले का चरित्र शुद्ध होना चाहिये। उसे व व्यसनों से मुक्त होना और उसकी जीवन-चर्या शुद्ध और त्विक होनी चाहिये। सेवा परायणता उसके जीवन का मंत्र । उसके जीवन में किसी बात की कमी न होगी। उसके द्वारा नेक कल्याण होगा। मानसिक और बौद्धिक उन्नति के लिये ध्यात्म ज्ञान और सरल साधन जानने के लिये ही यह प्रार्थना ही जाती है।

प्रार्थना एकाग्र चित होकर चुपचाप नेत्र मूंदे हुये सूर्योदय के पूर्व ब्रह्म मुहूर्त में उठकर नित्य नियमित रूप से घंटा, आधा-घंटा जितना समय इसमें दे सको, करनी चाहिये।

इसी प्रकार रात्रि को सोते समय भी करना चाहिये। जो मनुष्य परोपकारी, चरित्रवान एवं प्रबल धारणा शक्ति वाले और निष्काम हैं, उनकी प्रार्थना कभी निष्फल नहीं जाती। वे प्रत्यक्ष फल प्राप्त कर सकते हैं।

(७) हे अनन्त शक्तिमान! आप हमारी आत्मा में अनन्त अनन्त आध्यात्मिक एवं मानसिक बल प्रदान कीजिये, जिससे हम सब सब प्रकार की शारीरिक एवं मानसिक व्याधियों तथा दुःख आपत्तियों से मुक्त होकर दूसरों को मुक्त करने में समर्थ हों।

(८) हे मंगलमय! आप हमारे सब प्रकार के दुर्गुणों तथा काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, संशय, चिन्ता, शोक आदि विकारों को दूर कीजिये, जिससे हम निर्भय होकर अपना जीवन सुख-शांति मय व्यतीत करते हुए आपके गुण और महिमा का गान नित्य करते रहें।

(९) हे दयासागर! आप हमारी आत्मिक उन्नति के मार्ग की रुकावटों को दूरकर हमारे ध्येय की पूर्ति में सफलता प्रदान कीजिये।

(१०) हे आनन्दघन! आप हम पर ऐसी दया कीजिये कि हमारा अति चंचल और चपल मन अनेक विषय संबंधी विचारों के जाल में भटकना छोड़कर सदा आपके प्रेम-सुधा-सागर में निमग्न होकर परमानन्ददायी पीयूष पान करता रहे। हम आपको क्षण भर भी विस्मृत न करके सदा आपके प्रकाशमय एवं आनन्दमय दिव्य आत्म स्वरूप का दर्शन करते रहें और हम उस स्वरूप में तन्मय तथा तल्लीन होकर सदा परमानन्द में निमग्न रहें।

(११) हे दयासिन्धु भगवन्! हम यह पूर्णतया निश्चित रूप से जानते हैं, कि आपकी कृपा होने पर ऐसी कोई शुभ इच्छा नहीं है जो पूर्ण न हो सके। इस जगत में कोई भी ऐसी दुर्लभ वस्तु नहीं है, जो प्राप्त न हो सके। ऐसा कोई भी कार्य नहीं है, जो

न सकें तथा आपको दया बिना हजारों नहीं लाखों प्रयत्न
ने पर भी किसी की कोई इच्छा पूर्ण नहीं होती। इसलिये
प हम पर सदा दया की दृष्टि रखें, तभी हमारी उपयुक्त
शुभ इच्छाएँ पूर्ण होंगी। यही हमारी अन्तिम प्रार्थना
।

आत्मिक उन्नति की प्रार्थना

हे परम पवित्र कृपालु परमेश्वर! हम आपके शरणागत
कर सप्रेम, अन्तःकरण से अभिवादन करते हैं, हमारा जीवन
पके हाथ में है। सब प्राणियों पर आपकी सम दृष्टि है,
सलिये हम भी सब प्राणियों से समान भाव तथा बन्धु भाव का
वहार करें, किसी से वैर-द्वेष तथा ईर्ष्या-भाव न रखें।
हमसे द्वेष और वैर करे, उसे हम क्षमा करें। तभी हम
आपकी कृपा तथा प्रीति के पात्र बनेंगे। हमें क्षमा करके ऐसी
सद्बुद्धि प्रदान कीजिये कि हम भूल से भी दया, क्षमा तथा
सत्य वचन का कदापि त्याग न करें।

हे दयामय पिता! हमारी आत्मा को बल प्रदान कीजिये
कि हम काम, क्रोध, लोभ मोह, मान, कषाय (राग-द्वेष) आदि
[illegible] पर
[illegible] ति के
[illegible] जब
[illegible] दुर्वा-
सनाएँ नष्ट होंगी और मनोवृत्ति पवित्र होगी, इसलिये हम
सविनय आपके प्रसाद और आशीर्वाद की सहायता माँगते हैं,
जिससे हमारा कल्याण हो।

हे करुणामय भगवान ! आपका हम पर अत्यन्त उपकार तथा दया है। इन उपकारों को हम क्षुद्र विषय भोगों में लिप्त होकर भूल न जायँ, स्थायी आनन्द, शांति व शाश्वत सुख, जो आत्म कल्याण करने वाले हैं, उस ओर दुर्लक्ष्य न करें। हे दयामय पिता ! हमारे मन को पवित्र कर बुद्धि को निर्मल कर, हमारे अंतःकरण के अन्धकार को नष्ट कर, हम में ज्ञान ज्योति का प्रकाश कर, ऐसी सुमति प्रदान करें कि हम नित्य नियमित रूप से आपकी आराधना, स्तुति, प्रार्थना, ध्यान व भजन करें । आपके उपकारों की हमें कभी विस्मृति न हो और लोक हितार्थ कार्य कर हम अपना कर्त्तव्य पालन करें।

हे दया सिन्धु , कृपा निधान, पतित पावन, करुणा सागर प्रभो ! कायिक, वाचिक और मानसिक पापों से हमें दूर रखिये। आप सर्व समर्थ हैं। परम न्यायकारी हैं, सर्व साक्षी और सर्वज्ञ हैं। पाप मार्ग की ओर दृष्टिपात करते ही हमारे मन में भय उत्पन्न हो, पाप का अनुताप बारम्बार होता रहे और हम पाप करने का साहस न करें । हमें मनोनिग्रह की शक्ति प्रदान कीजिये।

हे प्रभु ! सम्पत्ति और विपत्ति के समय सदा सर्वदा आप हमारे साथ हैं। धन वैभव सम्पन्न होकर हम आपको भूल न जायँ और अभिमान के मद में फँस न जायँ। आपकी विस्मृति ही हमें अधोगति में ले जाने वाली है, इसलिये हमारी सद्बुद्धि सदा बनी रहे, यह भावना भी दृढ़ रहे कि आपका सहवास और सम्बन्ध सदैव बना हुआ है और आपकी इच्छा के अनुसार ही हमारा आचरण रहे।

हे परमात्मन, महान पिता ! आप हम पर करुणा करें कि आपका सौन्दर्य हम सर्वदा अपने हृदय में धारण करें, और

हमारी आत्मा को ज्योति हो, हम आपके इष्ट तेज का ध्यान करते हैं। हे अलौकिक ज्योतिर्मय देव! हमारी बुद्धि को पवित्र और प्रकाशित कीजिये और हमें सत्कर्मानुष्ठान में प्रवृत्त कीजिये।

हे अनन्त विज्ञान! हमारी बुद्धि के प्रकाशक, परमेश्वर! हम दीन बालक आपके शरणागत हैं। जिस समय पुत्र, बन्धु भगिनी, पत्नी, मित्र सब मेरा परित्याग करेंगे, उस समय इस निराश मृत्योन्मुख मुझ प्राणी को आप कृपा करके त्याग न कीजियेगा और न मैं आपका परित्याग करूँ। हे प्रभो! मैं तेरा कदापि परित्याग न करूँ और तू कृपा करके मेरा परित्याग मत करना, यही मेरी हार्दिक प्रार्थना है। संसार के सब प्रकार के भय, त्रास, सन्ताप तथा दुःख पर विजय प्राप्त करके हम सपरिवार आपकी आराधना करें। इस समय हमारा देश धर्म हीन, शक्तिहीन तथा श्रद्धाहीन हो गया है, सर्वत्र अत्याचार, अशान्ति, राग-द्वेष, आधिव्याधि और दरिद्रता का ही राज्य हो रहा है।

हे दयामय! इस देश पर कृपा कीजिये कि देशवासियों की प्रवृत्ति सदाचरण की ओर हो। इस देश में आरोग्य, आनन्द, शांति, प्रेम, सुख-समृद्धि की वर्षा हो और सर्वत्र मंगल भाव का प्रसार हो। आपके आशीर्वाद से हमारी मंगल कामना पूर्ण हो, हमें सत्य और ज्ञान प्राप्त हो, हमारे प्रेम, विश्वास और भक्ति में उत्तरोत्तर वृद्धि हो, यही हमारी विनय प्रार्थना है।

कर्त्तव्य

इस सब कथन का सारांश यह है कि प्रार्थना में अमोघ बल है, प्रार्थना सब बलों का भंडार है। अतएव समस्त स्त्री पुरुषों को प्रार्थना सीखनी चाहिये।

सब काम छोड़कर नित्य नियम से समय पर प्रार्थना अवश्य करनी चाहिये।

परमेश्वर की प्रार्थना करोड़ों काम छोड़कर करनी चाहिये। प्रार्थना से सभी आवश्यकताएँ पूर्ण होती हैं। जो मनुष्य चाहे, इसका प्रत्यक्ष फल प्राप्तकर सकता है।

शुभास्तु! सर्व जगत का कल्याण हो।

०

देवता

स्वतः नग्न रह कर, पराया तन ढाँकता,
विष ले स्वतः, अमिय जग को पिलाता है।
दीनबन्धु सम बन्धु, दीनों का अनमोल,
गोद ले पतित को भी पावन बनाता है॥
देता सहारा, सुख दान-दुखियों को सदा,
कारण रहित उपकार जिसे भाता है।
तन मन धन का उपयोग हो पराये हित,
हित सब का जो करे देव कहलाता है॥

ॐ

सवैया

माया के अँगार में, अँगार हो धुगाते तुम,
द्वार वे तुम्हारे सुधा धार दरसाते हैं।
तुम उनके हो, और वे हैं तुम्हारे सदा,
भूल अपराध हाहाकार मचवाते हैं॥
लेने को अमोद गोद, उन्मुख अनाथ नाथ,
हाय किन्तु उनके चठे ही रह जाते हैं।
हाय रे अभागे जीव, भागे फिरते हो तुम,
दूर हट जाते, श्याम निकट बुलाते हैं॥

ॐ

वि नहीं हम चाहत हार, जो आज तुम्हें फल और को चाहें।
सी न आस रखैं हम, भूल जो दूसरी ओर मिलावें निगाहें॥
ास्य मिले तुम से बढ़के, हम चाहें तुम्हीं को, तुम्हीं को सराहें।
ाण रहें जब लों तब लों हम नेह को नातो तुम्हीं से निबाहें॥

ॐ

वेद वंदनीय हृदयहृ के निवासी प्रभु,
महिमा अमित तिहुँ लोक मे विहारी है।१।
त्रिपुर विदारक अखिल लोक पालक प्रभु,
अमर तव नाम रोग शोक भयहारी है।२।
आयो हौं शरण मोहिं अभय करहु नाथ,
[illegible] मेरो भारी है।३।
[illegible] या तुम,
[illegible] री है।४।

पिशाच

करते आराम, नींद औरों की हरामकर,
सीने पर दीन के मशीनें जो चलाते हैं।
कम दे मजूरी, मजबूरी का उठा के लाभ,
रक्त चूसने में दूसरों का, न लजाता है॥
हाय! असहाय की न हाय सुनता है जो,
गला घोंट दुबलों का, धाम अपना बनाता है।
स्वार्थ के सँघाती सदा, परहित घाती जो,
सांच कहूँ नर न वह, पिशाच कहलाता है॥

❀

कबिरा जंत्र न बाजई, टूट गये सब तार,
जंत्र बिचारा क्या करे, चले बजावन हार।
पानी केरा बुदबुदा, अस मानुस की आस,
सब तारे छिप जायँगे, ज्यों ही हुआ प्रभात॥

❂

जो किसी बात का सोच नहीं करता, शत्रु-मित्र में तथा [मा]न-अपमान में समभाव रखता है और गर्मी-सर्दी एवम् [सु]ख-दुःख जिसके लिये बराबर हैं, उसकी बुद्धि सदा स्थिर रहती है।

●

सवैया

माया के अँगार में, अँगार हो फुलाते तुम,
हार वे तुम्हारे सुधा धार बरसाते हैं।
तुम उनके हो, और वे हैं तुम्हारे सदा,
भूल अपराध हमारद अपनाते हैं॥
लेने को मनोद गोद, उन्मुख अनाथ नाथ,
हाथ किन्तु उनके बढ़े ही रह जाते हैं।
हाय रे अभागे जीव, भागे फिरते हो तुम,
दूर हट जाते, श्याम निकट बुलाते हैं॥

(२)

प्रेम नहीं हम चाहत हाय, जो आज तुम्हें कल और को चाहें।
ऐसी न प्रीति करें हम, भूल जो दूसरी ओर मिलावें निगाहें॥
लाख मिले तुम से बढ़ के, हम चाहें तुम्हीं को, तुम्हीं को सराहें।
प्राण रहें जब लौं तब लौं हम नेह को नातो तुम्हीं से निबाहें॥

(३)

वेद वन्दनीय वृन्दावन के निवासी प्रभु,
महिमा अमित तिहूँ लोक में तिहारी है।।१।।
त्रिपुर विदारक अखिल लोक पालक प्रभु,
र तव नाम रोग शोक अपहारी है।।२।।
गो हौं शरण मोहि अभय करहु नाथ,
ते निरास मैं भरोस तेरो भारी है।।३।।
न के जिवैया, भव जाल के मिटैया तुम,
ा करो पार यह अरज हमारी है।।४।।

●

पिशाच

करते आराम, नींद औरों की हरामकर,
सीने पर दीन के मशीनें जो चलाते हैं।
कम दे मजूरी, मजबूरी का उठा के लाभ,
रक्त चूसने में दूसरों का, न लजाता है॥
हाय! असहाय की न हाय सुनता है जो,
गला घोंट दुर्बलों का, धाम अपना बनाता है।
स्वार्थ के सँघाती सदा, परहित घाती जो,
सांच कहूँ नर न वह, पिशाच कहलाता है॥

❀

कबिरा जंत्र न बाजई, टूट गये सब तार,
जंत्र बिचारा क्या करे, चले बजावन हार।
पानी केरा बुदबुदा, अस मानुस की श्वास,
सब तारे छिप जायँगे, ज्यों ही हुआ प्रभात॥

⊙

जो किसी बात का सोच नहीं करता, शत्रु-मित्र में तथा
मान में समभाव रखता है और गर्मी-सर्दी एवम्
जिसके लिये बराबर है, उसकी बुद्धि सदा स्थिर
।

सवैया

घर, धन मोह छोड़, परिजन मोह छोड़,
नर तन मोह छोड़, मुग्ध बन जाते हैं।
कुल मद मोह छोड़, जनपद मोह छोड़,
पद पद मोह छोड़, विरत उठाते हैं॥
राज्य वसुधा को छोड़, अपर सुधा को छोड़,
अमर सुधा को छोड़, होते मदमाते हैं।
ऐसा कौन दिव्य रस इन चरणों में भरा,
पीते जिसे बार-बार भक्त ना अघाते हैं॥

●

मुस्कान की मधुरता

जाने किस कारण प्रियवर, होता तुमसे अनुराग नहीं।
प्रत्यक्ष दुसह दुख पाकर भी, होता विषयों का त्याग नहीं॥
क्षण भंगुर जीवन का दीपक, क्या जाने किस क्षण बुझ जावे।
यह जान जान, अनजान बनूँ, इस भ्रम की कौन थाह पावे॥
यह मेरा ही भ्रम है, अथवा यह दोष प्रबल माया का।
उठ उठकर मैं गिर जाता हूँ, विश्राम न जग में छाया का॥
जाने कितने जीवन मेरे, मिलनोत्कंठा में बीत गये।
मोहादिक दैत्यों से लड़कर, मैं हार गया, वे जीत गये॥

प्रदेश तीर्थ कहलाते हैं

देह धारियों के दुख लख, धर देह जहाँ प्रभु आते हैं।
स्वयं अजन्मा और अकर्ता, जन के कष्ट मिटाते हैं ॥
लीला के पावन प्रदेश, जो उनकी याद दिलाते हैं।
शिक्षा देते जो सुमार्ग की, तीर्थ राज कहलाते हैं ॥

o

तू और मैं

क्या निपट पाषाण समझूँ, जब बने भगवान मेरे।
सृष्टि की हर नवल कृति में, दिख रहे हैं रूप तेरे॥
शून्य नभ पर दृष्टि बाँधे, मग्न हम हैं ध्यान तेरे।
दूर से मुस्का रहा तू, रो रहे जब प्राण मेरे॥
दीप, अक्षत, पुष्प कुछ भी, तो नहीं है पास मेरे।
जानता हूँ सिर्फ इतना, प्राण आश्रित, एक तेरे॥
चाह थी यह, छोड़ जग को, शीघ्र पहुँचूँ पास तेरे।
किन्तु तूने ही कहा था, जो जगत में भक्त मेरे॥
अन्य का कब ध्यान मुझ को, सिर्फ हो तुम एक मेरे।
चाहता हूँ देखना मैं, दूर से ही कार्य तेरे॥
इसलिए मैं कह रहा हूँ, कर्म हैं निष्काम तेरे।
एक दिन निश्चय सुनोगे, भक्त को, भगवान मेरे॥

सवैया

घर, धन मोह छोड़, परिजन मोह छोड़,
नर तन मोह छोड़, मुग्ध बन जाते हैं।
कुल मद मोह छोड़, धनमद मोह छोड़,
पर पद मोह छोड़, विरल कहाते हैं॥
राज्य वसुधा को छोड़, अधर सुधा को छोड़,
अमर सुधा को छोड़, होते मदमाते हैं।
ऐसा कौन दिव्य रस इन चरणों में भरा,
पीते जिसे बार-बार भक्त ना अघाते हैं॥

●

मुस्कान की मधुरता

जाने किस कारण प्रियवर, होता तुमसे अनुराग नहीं।
प्रत्यक्ष दुसह दुख पाकर भी, होता विषयों का त्याग नहीं॥
क्षण भंगुर जीवन का दीपक, क्या जाने किस क्षण बुझ जाये।
यह ज्ञान जान, अनजान बनूँ, इस भ्रम की कौन थाह पाये॥
यह मेरा ही भ्रम है, अथवा यह दोष प्रबल माया का।
उठ उठकर मैं गिर जाता हूँ, विश्राम न जग में छाया का॥
जाने कितने जीवन मेरे, मिलनोत्कंठा में बीत गये।
मोहादिक दैत्यों से लड़कर, मैं हार गया, वे जीत गये॥

प्रदेश तीर्थ कहलाते हैं

देह धारियों के दुख लख, धर देह जहाँ प्रभु आते हैं।
स्वयं अजन्मा और अकर्ता, जन के कष्ट मिटाते हैं॥
लीला के पावन प्रदेश, जो उनकी याद दिलाते हैं।
शिक्षा देते जो सुमार्ग की, तीर्थ राज कहलाते हैं॥

○

तू और मैं

क्या निपट पाषाण समझूँ, जब बने भगवान मेरे।
सृष्टि की हर नवल कृति में, दिख रहे हैं रूप तेरे॥
शून्य नभ पर दृष्टि बाँधे, मग्न हम हैं ध्यान तेरे।
दूर से मुस्का रहा तू, रो रहे जब प्राण मेरे॥
दीप, अक्षत, पुष्प कुछ भी, तो नहीं है पास मेरे।
जानता हूँ सिर्फ इतना, प्राण आश्रित, एक तेरे॥
चाह थी यह, छोड़ जग को, शीघ्र पहुँचूँ पास तेरे।
किन्तु तूने ही कहा था, जो जगत में भक्त मेरे॥
अन्यथा कब ध्यान मुझ को, सिर्फ हो तुम एक मेरे।
चाहता हूँ देखना मैं, दूर से ही कार्य तेरे॥
इसलिए मैं कह रहा हूँ, कर्म हैं निष्काम तेरे।
एक दिन निश्चय सुनोगे, भक्त को, भगवान मेरे॥

●

( )

सवैया

घर, धन मोह छोड़, परिजन मोह छोड़,
नर तन मोह छोड़, मुग्ध बन आते हैं।
कुल मद मोह छोड़, जनपद मोह छोड़,
पद पद मोह छोड़, चित्त उठाते हैं॥
राज्य वसुधा को छोड़, अधर सुधा को छोड़,
अमर क्षुधा को छोड़, होते मदमाते हैं।
ऐसा कौन दिव्य रस इन चरणों में भरा,
पीते जिसे बार-बार भक्त ना अघाते हैं॥

●

मुस्कान की मधुरता

है किस कारण प्रियवर, होता तुममें अनुराग नहीं।
यह दुसह दुख पाकर भी, होता विषयों का त्याग नहीं॥
क्षणभंगुर जीवन का दीपक, क्या जाने किस क्षण बुझ जाये।
है जान जान; अनजान बनूँ, इस भ्रम की कौन थाह पाये॥
है मेरा ही भ्रम है, अथवा यह दोष प्रबल माया का।
उठ उठकर मैं गिर जाता हूँ, विश्वास न जग में छाया का॥
जाने कितने जीवन मेरे, मिलनोत्कंठा में बीत गये।
हार्दिक दैत्यों से लड़कर, मैं हार गया, वे जीत गये॥

श्रद्धा अरु विश्वास बिनु, भक्ति भाव नहिं होय।
नेत्र विकल जिमि जीव को, वस्तु न दीखे कोय॥

❀

मनुज जन्म दुर्लभ अहै, होय न बारम्बार।
तरुवर से पत्ता झड़े, बहुरि न लागे डार॥

❀

जहाँ काम, तहँ राम नहिं, जहाँ राम, नहि काम।
तुलसी कबहुँ न रहि सके, रवि रजनी इक ठाम॥

❀

पुरुषारथ, स्वारथ, सकल, परमारथ परिनाम।
सुलभ सिद्धि सब साहिबी, सुमरत सीताराम॥

❀

कबिरा या जग आय के, कोउ काहि का नाहिं।
घर की नारी क्या करे, तन की नारी नाहिं॥

❀

काम, क्रोध, मद, लोभ की, जब लग मन में खान।
तुलसी पंडित, मूरखा, दोनों एक समान॥

❀

मारा मूरा बहु मिले, घायल मिले न कोय।
घायल को घायल मिले, राम भगत दृढ़ होय॥

❀

चाह गई चिंता गई, मनुआ बेपरवाह।
जिसको कछू [illegible]

माया मरे न मन मरे, मर मर गयो शरीर ।
आशा तृष्णा ना मरी, कह गये दास कबीर ॥

❀

बन्दा सत मत छोड़िये, सत छोड़े पत जाय ।
सत की बाँधी लक्ष्मी, फेर मिलेगी आय ॥

❀

रखजय किसको रोइये, हँसिये कौन विचार ।
गये तो आवन को नहीं, रहे तो जावन हार ॥

❀

मन लोभी, मन लालची, मन चंचल, मन चोर ।
मन के मते न चालिये, पलक पलक मन और ॥

❀

जाको राखे साइयाँ, मार सके ना कोय ।
बाल न बाँका कर सके, जो जग वैरी होय ॥

❀

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय ।
जो दिल खोजा आपना, मुझसा बुरा न कोय ॥

❀

पानी केरा बुदबुदा, अस मानस की जात ।
एक दिन ये छिप जायँगे, तारे ज्यों परभात ॥

❀

सिरह कमण्डल कर लिये, वैरागी दोउ नैन ।
माँगें घर घर मधुकरी, रटें रहें दिन रैन ॥

तुलसी चाह गरीब की, थोड़े से ही जाय ।
मार मिलावे जन्म भर, मनुष्यों से बढ़ जाय ॥

❀

तुलसी या संसार में, भाँति-भाँति के लोग ।
सबसे हिल मिलकर रहो, नदी नाव संजोग ॥

❀

तुलसी बिरवा बाग के, सींचत हूँ कुम्हलायँ ।
रामभरोसे जे रहैं, पर्वत पे हरियायँ ॥

❀

तुलसी मीठे वचन से, सुख उपजत चहुँ ओर ।
वशीकरण यक मन्त्र है, तज दे वचन कठोर ॥

❀

देख पराई चूपरी, मत ललचावे जीव ।
रूखा सूखा खाइ के, ठण्ढा पानी पीव ॥

❀

मिष्ट वचन से जाय मिट, क्रोधी का अभिमान ।
शीतल जल से ज्यों मिटे, गुरवहि दूध उफान ॥

❀

कै बिरहन को मौत दे, कै आपा दिखलाय ।
आठ पहर को दाझना, मोसों सही न जाय ॥

❀

प्रीतम को पतियाँ लिखूँ, जो कहुँ देश विदेश ।
तन में, मन में, नैन में, ता को कहा संदेश ॥

❀

लाली मेरे लाल की, जित देखव तित ला
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई ला

❀

माया, कोड़ी, कामिनी, ये नंगी तलवा
निकले जन हरि भजन को, बीचहि लिया संभा

❀

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरहु छिटकाय
टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ पड़ जाय

❀

रहिमन वे नर मर चुके, जो कहुँ मांगन जायँ
उनसे पहले वे मुए, जिन मुख निकसत नायँ

❀

रहिमन चुप हो बैठिये, देख दिनन के फेर ।
जब नीके दिन आइहैं, बनत न लगिहै देर ॥

❀

प्रीतम छवि नैनन बसी, पर छवि कहाँ समाय ।
भरी सराय निहारिके, आप पथिक फिर जाय ॥

❀

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग ।
चन्दन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग ॥

❀

कहि रहीम सम्पत्ति के, सगे बनत बहुरीत ।
विपत कसौटी जे कसे, तेई सांचे मीत ॥

❀

यों रहीम सुख होत है, उपकारी के संग ।
बाँटन वारे को लगै, ज्यों मेंहदी को रंग ॥

*

मगन मगन सब कोइ कहै, मगन कहावै सोइ ।
नारायण की लगन में, तन-मन दीजै खोइ ॥

*

क्षमा बड़न को उचित है, छोटन को उत्पात ।
कहि रहीम, का हरि घट्यौ, जो भृगु मारी लात ॥

ॐ

ईमान दिया है हक़ को, अब और क्या मिले ।
वह चीज़ मिल गई है, जिससे खुदा मिले ॥
मालिक तेरी रज़ा रहे, और तू ही तू रहे ।
बाक़ी न मैं रहूँ, न मेरी आरज़ू रहे ॥
जब तक कि तन में जान, रगों में लहू रहे ।
तेरा ही ज़िक्र हो, या तेरी जुस्तजू रहे ॥

ॐ

बिनु सतसंग न हरि कथा, नहि बिनु मोह न भाग ।
मोह गए बिनु राम पद, होइ न दृढ़ अनुराग ॥

चार चातुर्य

१. तीन काम बड़े महत्व के हैं—प्राणी मात्र पर दया करना, दुखियों के दुःखों को दूर करना, निर्बलों और असहायों की सहायता करना।

२. चार के संग से बचने की चेष्टा करो—नास्तिक, अन्याय का धन, जवान स्त्री और दूसरे की बुराई।

३. चार चीजें अपने आप आती हैं—सुख, दुःख, जोखिम और मृत्यु।

४. चार का परिचय चार अवस्था में मिलता है—दरिद्रता में मित्र का, निर्धनता में स्त्री का, रण में शूरवीर का और बदनामी में बन्धु-बान्धवों का।

५. चार बहुत दुर्लभ हैं—धन में पवित्रता, दान में विनय, वीरता में दया और अधिकार में निरभिमानता।

६. चार बातों को याद रखो—बड़े बूढ़ों का आदर करना, छोटों की रक्षा करना और उन पर स्नेह करना, बुद्धिमानों से सलाह लेना और मूर्खों के साथ कभी न उलझना।

७. दरिद्र, अपाहिज, रोगी, अनाथ और विपत्ति में पड़े हुए व्यक्तियों को अपने से छोटा मत समझो, उनसे घृणा न करो। उनकी सेवा करो और उन्हें सुख पहुंचाओ।

८. जो लोग अपना गुणगान सुनकर [illegible] हर्ष के विकार से मस्त नहीं होते और निन्दा सुनने [illegible] के साथ [illegible] से आत्म निरीक्षण करने लगते हैं, वे ही सच्चे बुद्धिमान मानव हैं।

९. [illegible] और [illegible] बहुत ही दुर्लभ हैं। [illegible]

करके, उनको सन्तुष्ट करके, उनका सत्संग करके पवित्र हो जाओ।

१०. सब धर्मों का मूल दया है, परन्तु दया के पूर्ण विकास के लिए क्षमा, नम्रता, शीलता, पवित्रता, संयम, सन्तोष, सत्संग, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह इन दस धर्मों का सेवन करना चाहिये।

११. जो पुरुष मन रूपी तीर्थ के, ज्ञान रूपी सरोवर में ईश्वर के ध्यान रूपी जल से स्नान करके राग-द्वेष रूपी मल को धो डालता है, वह संसार से बिना प्रयत्न तर जाता है।

१२. जैसे मरे हुए मनुष्यों से कोई ईर्ष्या नहीं करता, वैसे ही जीवित से भी ईर्ष्या नहीं करनी चाहिये। क्योंकि उस मनुष्य को और ईर्ष्या करने वालों को एकसा ही मरना है।

१३. मर्यादा से चलो, कभी सीमा के बाहर मत जाओ। अपनी हानि करने वाले का जहाँ तक बन पड़े, क्षमा करो।

१४. सत्यवादी पुरुष यद्यपि आर्थिक दृष्टि से कम धन जोड़ता है, किन्तु वह मनुष्यों का वास्तविक राजा है।

१५. हर्ष के साथ शोक और भय इस प्रकार लगे रहते हैं, जिस प्रकार प्रकाश के संग छाया। सच्चा सुखी वही है जिसकी दृष्टि में हर्ष-शोक दोनों बराबर हैं।

१६. जिसमें सहनशीलता नहीं है, वह चाहे कितना बड़ा विद्वान, तपस्वी, पंडित क्यों न हो कभी भी भगवत कृपा का अधिकारी नहीं बन सकता।

१७. जिसने इच्छा का त्याग किया हो, उसको घर छोड़ने की क्या आवश्यकता। जो इच्छाओं का बन्धु है, उसको वन

चार चातुर्य

1. तीन काम बड़े महत्त्व के हैं—प्राणी मात्र पर दया करना, दुखियों के दुःखों को दूर करना, निर्बलों और असहायों को सहायता करना।
2. चार के संग से बचने की चेष्टा करो—नास्तिक, अन्याय का धन, जवान स्त्री और दूसरे की बुराई।
3. चार चीजें अपने आप आती हैं—सुख, दुख, जोखिम और मृत्यु।
4. चार का परिचय चार अवस्था में मिलता है—दरिद्रता में मित्र का, निर्धनता में स्त्री का, रण में शूरवीर का और संकटों में बन्धु-बान्धवों का।
5. चार बहुत दुर्लभ हैं—धन में पवित्रता, दान में विनय, वीरता में दया और अधिकार में निरभिमानता।
6. चार बातों को याद रखो – बड़े बूढ़ों का आदर करना, छोटों की रक्षा करना और उन पर स्नेह करना, बुद्धिमानों से सलाह लेना और मूर्खों के साथ कभी न उलझना।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

२४. जिसके हृदय में ईश्वर प्रवेश कर जाता है, उस हृदय में काम, क्रोध, अहंकार आदि सब विकार भाग जाते हैं। वे फिर नहीं ठहर सकते।

२५. इस शरीर को चाहे जितना सुख-दुःख हो, मन व्याकुल नहीं करें। इसकी हानि तो वस्तु पदार्थों में अन्तर भाव में बनी रहती है।

२६. सब मिले हुओं मित्र का आदर करो, गरीबों से सहानुभूति करो और जरूरत के दुःख बिना संकोच सहायता करो।

२७. जिसने कामनाओं का त्याग कर मन को शांत किया और शांति प्राप्त कर ली, वह राजा हो या रंक संसार में उसके सुख ही सुख है।

२८. ज्ञान से सब प्रकार के सन्ताप नष्ट होते हैं। ज्ञान से दुःख, भय, शोक आदि विकार दूर होते हैं। ज्ञानी मनुष्य ही यथार्थ में आत्मज्ञान का अधिकारी है।

२९. दुर्जन यदि विद्वान हो, तो भी उसका संग नहीं करना चाहिये। क्या मणि सुशोभित सर्प भयानक नहीं होता?

३०. सब के साथ दयालुता का व्यवहार करो। चाहे वे किसी भी दशा में क्यों न हों क्रोध की अवस्था में भी दयापूर्ण शब्दों का ही प्रयोग करो।

३१. सबसे उत्तम और सबसे लाभदायक अध्ययन सच्चा आत्म ज्ञान और आत्म विचार है।

में रहने से क्या लाभ। सच्चा त्यागी वहीं है, वहीं धन और श्रद्धा है।

१८. जीवन मुक्त उसे कहते हैं जिसके हृदय में पूर्ण शान्ति आ जाती है, आनन्द का भण्डार खुल जाता है और जिसका चित्त सदा परमात्मा के चरणों में लगा रहता है।

१६. यदि तुम अपनी इच्छाओं को अनुकूल नहीं बना सकते, तो तुम दूसरों से कैसे आशा कर सकते हो कि वे तुम्हारी इच्छा के अनुकूल हों।

२०. मनुष्य जितना नम्र होगा, जितना अधिक परमात्मा में विश्वास रखेगा, उतना ही अधिक वह अपने कर्मों में कुशल होगा और उतनी ही अधिक शान्ति और तृप्ति को भोगेगा।

२१. ईश्वर दर्शन प्राप्त कर लेने पर मनुष्य फिर जगत के जंजाल में नहीं पड़ता। ईश्वर को छोड़कर एक क्षण भी उसे शान्ति नहीं मिलती, एक क्षण भी ईश्वर को छोड़ने से मृत्यु कष्ट होता है।

२२. हे मनुष्य! तुम इस संसार की वस्तुओं में भूले हुए हो, यह सब छोड़कर जब तुम ईश्वर के लिये रोओगे, तब प्रभु उसी वक्त आकर तुम्हें गोद में उठा लेंगे।

२३. जिसको धर्म पालन करने की तीव्र इच्छा होती है, भगवान उसके पास सद्गुरु भेज देते हैं। गुरु के मिले साधकों को चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं रहती।

२४. जिसके हृदय में ईश्वर प्रवेश कर गया है, उस हृदय से काम, क्रोध, अहंकार आदि सब निकल जाते हैं। वे फिर नहीं ठहर सकते।

२५. इस शरीर को चाहे जितना सुख-दुःख हो, भक्त उसकी परवाह नहीं करते। उसकी वृत्ति तो प्रभु चरणों में अनन्य भाव से लगी रहती है।

२६. जब मिले तभी मित्र का आदर करो, पीछे से प्रशंसा करो और जरूरत के वक्त बिना संकोच सहायता करो।

२७. जिसने कामनाओं का नाश कर मन को जीत लिया और शांति प्राप्त कर ली, वह राजा हो या रंक संसार में उसको सुख ही सुख है।

२८. तप से सब प्रकार के सन्ताप नष्ट होते हैं। तप से दुःख, भय, शोक आदि विकार दूर होते हैं। तपस्वी भक्त ही यथार्थ में भगवद्धाम का अधिकारी है।

दुर्जन यदि विद्वान हो, तो भी उसका संग नहीं करना चाहिये। क्या मणि सुशोभित सर्प भयानक नहीं होता?

सब के साथ दयालुता का व्यवहार करो। चाहे वे किसी भी दशा में क्यों न हों क्रोध की अवस्था में भी दयापूर्ण शब्दों का ही प्रयोग करो।

१. सबसे उत्तम और सबसे लाभदायक अध्ययन सच्चा आत्म ज्ञान और आत्म विचार है।

२. जो वस्तु अतिथि को न खिलावे उसे आप भी न खावे। अतिथि की सेवा करने से धन, यश, आयु और स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

३. किसी को दुःख नहीं देना चाहिए तथा कोई तुम्हारे विरुद्ध बर्ताव करे, तब भी उसका बदला लेने की इच्छा न करके इस भाव को गुप्त रखना, यही सहन-शीलता है।

४. संशयात्मक, चंचल चित्त, अविश्वासी, डरपोक, चिन्तातुर और इन्द्रियों के गुलाम को कभी स्वप्न में भी सुख नहीं होता।

५. चार प्रकार के मनुष्य होते हैं—(१) मक्खी चूस, न आप खाय न दूसरे को दे। (२) कन्जूस, आप तो खाय पर दूसरे का न दे। (३) दयालु आप भी खाय और दूसरे को भी दे। (४) त्यागी आप न खाय और दूसरे को दे।

६. अभी सोकर क्या करते हो, उठो जागो और परमात्मा को याद करो। एक दिन तो लम्बे पैर पसारकर सभी को सोना है।

७. जो पुरुष मन रूपी तीर्थ के ज्ञान रूपी सरोवर में ईश्वर के ध्यान रूपी जल से स्नान करके राग-द्वेष रूपी मल को धो डालते हैं। वे संसार सागर से बिना प्रयास के तर जाते हैं।

८. जैसे सत्पुरुष बड़े बूढ़ों का अभिवादन करके सुखी होते हैं, वैसे ही मूर्ख लोग सत्पुरुषों की निन्दा करके प्रसन्न होते हैं।

४५. धैर्य, क्षमा, मानसिक नियंत्रण, चोरी न करना, शौच, स्वच्छता, इन्द्रियों को वश में रखना, बुद्धि, विद्या, सत्य और क्रोध नियंत्रण, ये धर्म के दस लक्षण हैं।

४६. जो स्त्री आज्ञाकारी है, चुगली न करती है, पति की आज्ञा मानती है। पति के बाद शेष भोजन करती है, और सन्तुष्ट रहती है, उसमें लक्ष्मी का वास है।

४७. आत्म सम्मान, आत्म ज्ञान और आत्म संयम ही व्यक्ति को शक्तिशाली बना सकते हैं।

४८. जिस घर में नित्य भगवान की कथा होती है, वह घर तीर्थ रूप ही है तथा उसमें रहने वालों के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।

४९. साधुओं का दर्शन बड़ा पवित्र होता है, क्योंकि साधु तीर्थ रूप ही है। तीर्थ तो समयानुसार फल देते हैं, पर साधु-समागम से फल तुरन्त मिलता है।

५०. जवानी, धन, आयु, कमल पर पड़ी हुई जल की बूँद के समान अत्यन्त चंचल है। यह जानकर एकमात्र अच्युत भगवान का ही भली-भांति आश्रय लेना चाहिये।

५१. वर्तमान काल में कर्म करने में मनुष्य पूर्ण स्वतंत्र है, परन्तु किये हुए कर्मों का फल भोगे बिना छुटकारा नहीं।

५२. चित्त संस्कारात्मक है। जैसा कर्म किया जाता है, चित्त पर उस कर्म का वैसा ही संस्कार पड़ता है। फिर वही संस्कार इच्छा के रूप में जागता है। अ[illegible] अनुसार कर्म होते हैं।

❁

ये भी गुनो

१. अपने चरित्र के बल पर शब्दों की कीमत बढ़ाओ।

५४. महान बनने के द्वार हरएक के लिये खुले हैं।

५५. अनीति के पैसे से आदमी गिर जाता है।

५६. मित्र अपनी तीसरी बाँह है।

५७. जैसी भावना होती है, वैसी ही सिद्धि।

५८. कठिनाइयों को जीतने वाला ही विजयी है।

५९. व्यापार में पत्र संक्षिप्त में लिखो।

६०. घास चोर शेर से मेहनत करने वाला कुत्ता भी अच्छा है।

६१. सत्य एवं प्रिय वचन बोलना चाहिये। जो प्रिय न होवे ऐसे सत्य को नहीं बोलना चाहिये, साथ ही साथ प्रिय असत्य भी नहीं बोलना चाहिये।

६२. याद कीजिये मैं दूसरों का क्या भला कर सकता हूँ।

६३. प्रमुख होने के बदले प्रमाणित बनो।

६४ यदि तुम्हें मानव जीवन सफल करना है, सच्ची सुख-शांति प्राप्त करनी है, तो भोगों की ओर से मुंह मोड़कर अपने जीवन का सुख भगवान की ओर कर दो।

५. मनुष्य के जीवन का चरित्र ही उत्तम सार है। उसकी रक्षा के लिये ब्रह्मचर्य पालन करना चाहिये।

६६. किसी के सामने किसी भी दूसरे की कही हुई बात को न कहना जिससे सुनने वाले के मन में उसके प्रति द्वेष दुर्भावना पैदा हो।

६७. आये हुए का सत्कार आदर करना, सम्मानों के साथ प्रेममय व्यवहार करना।

६८. किसी का अहित हो ऐसी बात न सोचना, न कहना, न कभी करना।

६९. धन, जन, विद्या, जाति, रूपरूप, स्वास्थ, बुद्धि का कभी अभिमान न करना।

७०. दूसरे की सेवा करने का अवसर मिलने पर सौभाग्य मानना और विनम्र भाव से निर्दोष सेवा करना।

७१. धन को सात्विक दान में, शरीर को सेवा में, वाणी को भगवत् गुणगान में, मन को भगवत् चिंतन में, जीवन को भगवत् प्राप्ति में लीन करो।

७२. अगर तुम सदा ही गौरवमय बनना चाहते हो, तो सब के प्रति समभाव व्यवहार करो।

७३. विश्व के समस्त प्राणियों से मैत्री हो, गुणी जनों से बड़ी प्रसन्नता मानना रहे, दुःखी प्राणियों पर अनुकम्पा रहे, तथा विरोधियों के प्रति मध्यस्थ भाव रखना।

७४. सबको अपनी आत्मा के समान देखना [illegible] सबके दुःख से दुःख और सुख में सुख अनुभव करने वाले को [illegible] [illegible]

७५. जो अपनी मनसहित इन्द्रियों का संयम करके सबको समभाव से देखते हैं और प्राणीमात्र के कल्याणार्थ उनकी सेवा में रत रहते हैं, वे ही भगवान को पाते हैं।

७६. दरिद्र, चिररोगी, मूर्ख, निरन्तरगामी, नित्यप्रवासी सदा दुखी रहते हैं और ईश्वर प्राप्ति नहीं कर सकते।

७७. जहाँ प्रेम का संचार है, वहाँ घृणा हृदय में हो नहीं सकती।

७८. जब तक शरीर स्वस्थ है, बुढ़ापा नहीं आता है, नेत्रों की रोशनी बनी है, आयु के दिन शेष हैं, तभी तक बुद्धिमान पुरुषों को अपने कल्याण के लिये अच्छी तरह यत्न कर लेना चाहिये। घर में आग लगने पर कुआँ खोदने से क्या होगा।

७९. दीन प्राणियों पर दया करो और यथा साध्य तन, मन, धन से उनकी सेवा करो।

८०. स्त्री चिंतन से काम, धन के चिंतन से लोभ और वैरी चिंतन से क्रोध उत्पन्न होता है।

८१. जिसका मन पवित्र नहीं होता, उसका कोई कार्य पवित्र नहीं होता।

८२. सन्तोष बिना कामना नाश नहीं होती और कामना रहते कभी स्वप्न में भी सुख नहीं हो सकता। सन्तोष व सुख श्रीराम भजन के बिना नहीं मिलते।

८३. नम्रता का कवच पहन लेने पर कोई कुछ बिगाड़ नहीं ——। कपास की रुई तलवार से नहीं कटती।

ादि ईश्वर-भक्ति को अमृत तुल्य समझकर सदैव सेवन करना चाहिए।

भगवान के नाम, रूप, गुण, प्रभाव चरित्र तथा रहस्य का श्रद्धा पूर्वक उच्चारण करते करते शरीर में रोमांचकर अवरोध, अश्रुपात, हृदय की प्रफुल्लता, मुग्धता आदि का होना कीर्तन भक्ति का स्वरूप है।

५. जो स्त्री या पुरुष त्याग रूपी सिंहासन पर आसीन है, वैराग्यरूपी मुक्तामाला से युक्त है, निष्कामना रूपी श्वेत वस्त्र धारण किये है, शीलरूपी आभूषण से शोभित है और ज्ञान रूपी मुकुट शीश पर धारण किए है, वह स्त्री या पुरुष ऐसा शोभायमान लगता है मानो स्वयं सौंदर्य निधान, सर्व शक्तिमान है और परमात्मा का उसके हृदयरूपी महल में वास है।

१०६. जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को उतारकर नए वस्त्र धारण करता है वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीर को त्याग कर नया शरीर प्राप्त करता है।

१०७. परलोक सत्य है और सत्य को सत्य मानने में ही कल्याण है। क्योंकि आत्मा नित्य है, शरीर के नाश होने पर भी आत्मा का नाश नहीं होता। इसलिए इस जन्म में किए हुए शुभाशुभ कर्मों का फल अगले जन्म में अवश्य ही भोगना पड़ता है।

१०८. सर्वभूतों के हित में रत रहकर निराभिमान निस्वार्थ भाव से सबकी आत्मा को सुख पहुँचाना ही अन्त करण की ... उत्तम उपाय है।

१०९. भूल कर भी दान का एक पैसा भी मत खाओ देकर पैसा मत हड़पो। धर्मशाला, गोशाला मन्दि रुपया मत खाओ। अन्यथा परलोक बिगड़ जायेग तुम्हें परलोक में गिद्ध नोच-नोच कर खाएँगे।

११०. न्याय और दण्ड देने का काम मनुष्य भी कर सक परन्तु क्षमा प्रदान करना एक ईश्वरीय गुण है, जि उपयोग धीर पुरुष ही करते हैं।

१११. परमार्थ में लगाया हुआ धन परमात्मा के धार्मिक बैं जमा करने के समान है। जो समय आने पर ब्याज स आपको अवश्य मिलेगा, इसमें सन्देह नहीं।

११२. प्रेमपूर्वक दिया गया उपदेश उत्कृष्ट है, लेकिन इस के लिए आवश्यक है कि उपदेशक स्वयं उस प्रकार आचरण करे, आदर्श स्थापित करे और त्याग जब तक वह स्वयं त्यागादि नहीं करता केवल देता है तब तक उसके उपदेश का कोई प्रभाव होता।

११३. बाण से हुआ घाव भर जाता है, कुल्हाड़ी से जंगल पुनः वृक्ष उगा देता है, किन्तु वाणी गये घाव की कोई दवा नहीं।

११४. भोजन, निद्रा, भय और मैथुन में मनुष्य कोई भेद नहीं। मनुष्य और पशु में ज्ञान ज्ञान रहित पशु नर तुल्य है।

११५. सत्याग्रही वह है जो अन्याय के विरुद्ध, न्याय के लिए परमात्मा के बल पर विश्व स्तर पर

११६. यह शरीर परमात्मा का मन्दिर है। इसमें परमात्मा का निवास रहता है। सदैव उन्हें अपने भीतर अनुभव करो। इस मन्दिर को कभी अपवित्र न होने दो। इसे अपवित्र बनाने वाली बातों व कर्मों से सदैव दूर रहो।

११७. जिस प्रकार पुराने व जीर्ण शीर्ण मकान को छोड़ने में मकान मालिक को दुख नहीं होता। उसी प्रकार इस शरीर के जर्जर अथवा मृत होने पर मोहवश चिंता न करना चाहिए।

११८. कोई भी सांसारिक सुख खतरे से खाली नहीं अतः इन सुखों से सदैव दूर रहना चाहिये।

११९. मनुष्य को चाहिए कि वह अपने दोष देखे, उनकी निन्दा मन ही मन करे और अपने को निर्दोष बनाने के लिए सतत प्रयत्न करे।

१२०. आत्म समर्पण किए बगैर प्रभु पर निर्भर नहीं हो सकते और स्वार्थ छोड़े बगैर आत्मसमर्पण नहीं हो सकता।

१२१. हे मानव! ईश्वर के मार्ग में न तो आँखों की जरूरत है और न जीभ की, परन्तु जरूरत है पवित्र हृदय की। प्रयत्न करो कि तुम्हारा भी हृदय पवित्र हो जावे।

१२२. सच्चे सत्यवादी गुणी भक्त पुरुष रात्रि को विश्राम करते समय भी ध्यान किया करते हैं। अन्य लोग सोचते हैं कि सो रहे हैं। नहीं, परन्तु वे परलोक की कामना करते हैं। वे बाह्य आडम्बर बिलकुल पसन्द नहीं करते।

१०६. भूल कर भी दान का एक पैसा भी मत खाओ और देकर पैसा मत हड़पो। धर्मशाला, गोशाला मन्दिर का रुपया मत खाओ। अन्यथा परलोक बिगड़ जायेगा और तुम्हें परलोक में गिद्ध नोच-नोच कर खाएँगे।

११०. न्याय और दण्ड देने का काम मनुष्य भी कर सकता है, परन्तु क्षमा प्रदान करना एक ईश्वरीय गुण है, जिसका उपयोग वीर पुरुष ही करते हैं।

१११. परमार्थ में लगाया हुआ धन परमात्मा के धार्मिक बैंक में जमा करने के समान है। जो समय आने पर ब्याज सहित आपको अवश्य मिलेगा, इसमें सन्देह नहीं।

११२. प्रेमपूर्वक दिया गया उपदेश उत्कृष्ट है, लेकिन इस उपदेश के लिए आवश्यक है कि उपदेशक स्वयं उस प्रकार का आचरण करें, आदर्श स्थापित करे और त्याग करे। जब तक वह स्वयं त्यागादि नहीं करता केवल उपदेश देता है तब तक उसके उपदेश का कोई प्रभाव नहीं होगा।

११३. बाण से हुआ घाव भर जाता है, कुल्हाड़ी से काटा गया जंगल पुनः वृक्ष उगा देता है, किन्तु वाणी-द्वारा किये गये घाव की कोई दवा नहीं।

११४. भोजन, निद्रा, भय और मैथुन में मनुष्य और पशुओं में कोई भेद नहीं। मनुष्य और पशु में ज्ञान का अन्तर है। ज्ञान रहित पशु नर तुल्य है।

११५. सत्याग्रही वह है जो अन्याय के विरुद्ध, न्याय की स्थापना के लिए परमात्मा के बल पर विरत स्वर पर लड़ता है।

११६. यह शरीर परमात्मा का मन्दिर है। इसमें परमात्मा का निवास रहता है। सदैव उन्हें अपने भीतर अनुभव करो। इस मन्दिर को कभी अपवित्र न होने दो। इसे अपवित्र बनाने वाली बातों व कर्मों से सदैव दूर रहो।

११७. जिस प्रकार पुराने व जीर्ण शीर्ण मकान को छोड़ने में मकान मालिक को दुख नहीं होता। उसी प्रकार इस शरीर के जर्जर अथवा मृत होने पर मोह-वश चिंता न करना चाहिए।

११८. कोई भी सांसारिक सुख सकटों से खाली नहीं अतः इन सुखों से सदैव दूर रहना चाहिये।

११९. मनुष्य को चाहिए कि वह अपने दोष देखे, उनकी निन्दा मन ही मन करे और अपने को निर्दोष बनाने के लिए सतत प्रयत्न करे।

१२०. आत्म समर्पण किए बगैर प्रभु पर निर्भर नहीं हो सकता और स्वार्थ छोड़े बगैर आत्मसमर्पण नहीं हो सकता।

१२१. हे मानव! ईश्वर के मार्ग में न तो आँखों की जरूरत है और न जीभ की, वरन् जरूरत है पवित्र हृदय की। प्रयत्न करो कि तुम्हारा भी हृदय पवित्र हो जाये।

१२२. सच्चे सत्यवादी गुणी भक्त पुरुष रात्रि को विश्राम करते समय भी ध्यान किया करते हैं। अन्य लोग सोचते हैं कि सो रहे हैं। नहीं, वरन् वे परलोक का काम करते हैं। वे वाह्य आडम्बर बिलकुल पसन्द नहीं करते।

१०९. भूल कर भी दान का एक पैसा भी मत खाओ और देकर पैसा मत हड़पो। धर्मशाला, गोशाला मन्दिर का रुपया मत खाओ। अन्यथा परलोक बिगड़ जायेगा और तुम्हें परलोक में गिद्ध नोच-नोच कर खाएँगे।

११०. न्याय और दण्ड देने का काम मनुष्य भी कर सकता है, परन्तु क्षमा प्रदान करना एक ईश्वरीय गुण है, जिसका उपयोग वीर पुरुष ही करते हैं।

१११. परमार्थ में लगाया हुआ धन परमात्मा के धार्मिक बैंक में जमा करने के समान है। जो समय आने पर ब्याज सहित आपको अवश्य मिलेगा, इसमें सन्देह नहीं।

११२. प्रेमपूर्वक दिया गया उपदेश उत्कृष्ट है, लेकिन इस उपदेश के लिए आवश्यक है कि उपदेशक स्वयं उस प्रकार का आचरण करे, आदर्श स्थापित करे और त्याग करे। जब तक वह स्वयं त्यागादि नहीं करता केवल उपदेश देता है तब तक उसके उपदेश का कोई प्रभाव नहीं होता।

११३. बाण से हुआ घाव भर जाता है, कुल्हाड़ी से काटा गया जंगल पुनः वृक्ष उगा देता है, किन्तु वाणी-द्वारा किये गये घाव को कोई दवा नहीं।

११४. भोजन, निद्रा, भय और मैथुन में मनुष्य और पशुओं में कोई भेद नहीं। मनुष्य और पशु में ज्ञान का अन्तर है। ज्ञान रहित पशु नर तुल्य है।

११५. सत्याग्रही वह है जो अन्याय के विरुद्ध, न्याय की स्थापना के लिए परमात्मा के बल पर सिर [illegible] पर [illegible]

११६. यह शरीर परमात्मा का मन्दिर है। इसमें परमात्मा का निवास रहता है। सदैव उन्हें अपने भीतर अनुभव करो। इस मन्दिर को कभी अपवित्र न होने दो। इसे अपवित्र बनाने वाले पापों व कर्मों से सदैव दूर रहो।

११७. जिस प्रकार पुराने व जीर्ण शीर्ण मकान को छोड़ने में मकान मालिक को दुःख नहीं होता। उसी प्रकार इस शरीर के जर्जर अथवा मृत होने पर मोह-वश चिंता न करना चाहिए।

११८. कोई भी सांसारिक सुख खतरे से खाली नहीं अतः इन सुखों से सदैव दूर रहना चाहिये।

११९. मनुष्य को चाहिए कि वह अपने दोष देखे, उनकी निन्दा मन ही मन करे और अपने को निर्दोष बनाने के लिए सतत प्रयत्न करे।

१२०. आत्म समर्पण किए बगैर प्रभु पर निर्भर नहीं हो सकते और स्वार्थ छोड़े बगैर आत्मसमर्पण नहीं हो सकता।

१२१. हे मानव! ईश्वर के मार्ग में न तो आँखों की जरूरत है और न जीभ की, वरन् जरूरत है पवित्र हृदय की। प्रयत्न करो कि तुम्हारा भी हृदय पवित्र हो जावे।

१२२. सच्चे सत्यवादी गुणी भक्त पुरुष रात्रि को विश्राम करते समय भी ध्यान किया करते हैं। अन्य लोग सोचते हैं कि सो रहे हैं। नहीं, वरन् वे परलोक की कामना करते हैं। वे बाह्य आडम्बर बिलकुल पसन्द नहीं करते।

१२३. जिस प्रकार स्नानादि से प्रतिदिन शरीर स्वच्छ करना आवश्यक है, उसी प्रकार भगवत् भजन रूपी स्नान से मन को भी प्रतिदिन शुद्ध करना चाहिए।

१२४. अपनी वाणी से ही मनुष्य मान-अपमान, विजय-पराजय, मित्रता-शत्रुता और सुख-दुख प्राप्त करता है।

१२५. सच्चा प्रेम माता के हृदय में और सच्ची शान्ति माता के चरणों में ही प्राप्त होती है।

१२६ भाई के प्रति पवित्र प्रेम और सच्ची आत्मा के दर्शन बहि के ही हृदय में होते हैं।

१२७. माता का आशीर्वाद और बहिन का प्यार जीतने के लि सदा प्रयत्नशील रहो।

१२८. जो मनुष्य आलस्य वश भलाई के स्वर्ण अवसर को हा से जाने देता है, वह उस मूर्ख के समान है, जो पास जल-स्रोत रहने पर भी प्यास नहीं बुझाता।

१२९. मनुष्य अपने चरित्र की पवित्रता और चित्त की शुद्ध का अभ्यास उसी समय तक कर सकता है जब तक वह भला चंगा है। अतः मनुष्य को चाहिये कि व वृद्धावस्था, बीमारी, मृत्यु आदि के पूर्व ही उसे जो कु शुभ कार्य करने हों, कर लेने चाहिए।

१३०. न्याय प्रियता, बड़ों का आदर, पवित्रता, चातुर्य, निस्वा भावना, शुभ चिन्तन, निर्लोभ, अतिथि प्रेम और दयालुत आदि भले मनुष्यों के लक्षण हैं।

वैष्णव जन

वैष्णव जनको तेने कहिये, जो पीड़ पराई जाणे रे ।
पर दुःखे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे ॥
सकल लोक मां सहुने वन्दे निन्दा न करे केनी रे ।
वाच काछ मन निश्चल राखे, धन धन जननी तेनी रे ॥
समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी पर स्त्री जेने मात रे ।
जिह्वा थकी असत्य न बोले पर धन नाले हाथ रे ॥
मोह माया व्यापे नहि जेने, दृढ़ वैराग्य जेना मनमां रे ।
रामनाम सूँ ताली लागी सकल तीरथ तेना तनमां रे ॥
वन लोभी ने कपट रहित छे काम क्रोध निवार्या रे ।
भणे नरसैयो तेना दरसन करता कुल एकोतर तार्या रे ॥

○

कामना

कह रहा हूँ, जो मुझे है, आज भगवन् मांगना ।
पर नहीं, हे प्रभु ! मुझे धन धान्य कंचन मांगना ॥
लोक आदर मान की भी, कुछ मुझे इच्छा नहीं ।
और क्या मुझको नहीं है, राज आसन मांगना ॥
सिद्धता, वैराग्य, जप, तप, नियम, साधन आदि को ।
यह नहीं कुछ भी, मुझे है पवित्र पावन मांगना ।
प्रेम इतना दो कि देखूँ प्रेममय संसार को ।
कामना है एक केवल, प्रेम जीवन मांगना ॥

देश में पूजा जाता है। परन्तु विद्वान सर्वत्र पूजा जाता है। अतः ज्ञानवान बनने के लिए कोशिश करो।

१४०. साधु वेश में अनेक शैतान छिपे रहते हैं। ऐसे धूर्त ढोंगी साधुओं पर कतई विश्वास नहीं करना चाहिए। अन्यथा धन, जन और जीवन नष्ट हो जायेगा।

१४१ प्रत्येक व्यक्ति को समाज हितैषी बनना चाहिए। उसकी रक्षार्थ तन, मन, धन से सहयोग देना चाहिए।

१४२. रात्रि को शयनकाल में दिन भर के किए हुए भले बुरे कार्यों का चिन्तन करना चाहिए। उनमें से अच्छे कार्यों की पुनरावृत्ति करने की कोशिश करनी चाहिए और बुरे कार्यों की आत्म निन्दा करके ऐसी कोशिश करनी चाहिए कि वे पुनः न हों।

१४३. उस परमात्मा के यथार्थ ज्ञान को तू उस तत्वदर्शी ज्ञानियों के पास जाकर समझ। उनको भली भांति दंडवत् प्रणाम करने से, सेवा करने से, कपट छोड़कर सरलता पूर्वक प्रश्न करने से, वे परमात्मा के तत्त्व को भली-भांति जानने वाले ज्ञानी महात्मा, तुझे उस तत्व ज्ञान का उपदेश देंगे।

१४४. ध्यान करते समय भगवान की लीला के साथ उनके स्वरूप सौन्दर्य, माधुर्य को देख देखकर पलपल में मुग्ध होना चाहिए। भगवान की लीला का तत्त्व रहस्य भी साथ साथ समझना चाहिए। भगवान के गुण, प्रभाव, तत्त्व, रहस्य को समझकर उनका ध्यान करना चाहिए।

०

देश में पूजा जाता है। परन्तु विद्वान सर्वत्र पूजा जाता है। अतः ज्ञानवान बनने के लिए कोशिश करो।

१४०. साधु वेश में अनेक शैतान छिपे रहते हैं। ऐसे धूर्त ढोंगी साधुओं पर कतई विश्वास नहीं करना चाहिए। अन्यथा धन, जन और जीवन नष्ट हो जायेगा।

१४१ प्रत्येक व्यक्ति को समाज हितैषी बनना चाहिए। उसकी रक्षार्थ तन, मन, धन से सहयोग देना चाहिए।

१४२. रात्रि को शयनकाल में दिन भर के किए हुए भले बुरे कार्यों का चिन्तन करना चाहिए। उनमें से अच्छे कार्यों की पुनरावृत्ति करने की कोशिश करनी चाहिए और बुरे कार्यों की आत्म निन्दा करके ऐसी कोशिश करनी चाहिए कि वे पुनः न हों।

१४३. उस परमात्मा के यथार्थ ज्ञान को तू उस तत्वदर्शी ज्ञानियों के पास जाकर समझ। उनको भली भांति दंडवत् प्रणाम करने से, सेवा करने से, कपट छोड़कर सरलता पूर्वक प्रश्न करने से, वे परमात्मा के तत्व को भली-भांति जानने वाले ज्ञानी महात्मा, तुझे उस तत्व ज्ञान का उपदेश देंगे।

१४४. ध्यान करते समय भगवान की लीला के साथ उनके स्वरूप सौन्दर्य, माधुर्य को देख देखकर पलपल में मुग्ध होना चाहिए। भगवान की लीला का तत्व रहस्य भी साथ-साथ समझना चाहिए। भगवान के गुण, प्रभाव, तत्व, रहस्य को समझकर उनका ध्यान करना चाहिए।

०

वैष्णव जन

वैष्णव जनतो तेने कहिये, जो पीड़ पराई जाणे रे ।
पर दुःखे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे ॥

सकल लोक मां सहुने वन्दे निन्दा न करे केनी रे ।
वाच काछ मन निश्चल राखे, धन धन जननी तेनी रे ॥

सम दृष्टि ने तृष्णा त्यागी पर स्त्री जेने मात रे ।
जिह्वा थकी असत्य न बोले पर धन भाले हाथ रे ॥

मोह माया व्यापे नहि जेने, दृढ़ वैराग्य जेना मनमा रे ।
रामनाम सूँ ताली लागी सकल तीरथ तेना मनमा रे ॥

धन लोभी ने कपट रहित छे काम क्रोध निवार्या रे ।
भणे नर सेये जेना दरसन करता कुल एकोत्तर तार्या रे ॥

o

कामना

कह रहा हूँ, जो मुझे है, आज भगवन् मांगना ।
पर नहीं, हे प्रभु ! मुझे धन धान्य कंचन मांगना ॥

लोक आदर मान की भी, कुछ मुझे इच्छा नहीं ।
और क्या मुझको नहीं है, राज आसन मांगना ॥

सिद्धता, वैराग्य, जप, तप, नियम, साधन आदि की ।
यह नहीं कुछ भी, मुझे है पतित पावन मांगना ।

प्रेम इतना दो कि देखूँ प्रेममय संसार को ।
कामना है एक केवल, प्रेम जीवन मांगना ॥

देश में पूजा जाता है। परन्तु विद्वान सर्वत्र पूजा जाता है। अतः ज्ञानवान बनने के लिए कोशिश करो।

१४०. साधु वेश में अनेक शैतान छिपे रहते हैं। ऐसे धूर्त ढोंगी साधुओं पर कतई विश्वास नहीं करना चाहिए। अन्यथा धन, जन और जीवन नष्ट हो जायेगा।

१४१ प्रत्येक व्यक्ति को समाज हितैषी बनना चाहिए। उसकी रक्षार्थ तन, मन, धन से सहयोग देना चाहिए।

१४२. रात्रि को शयनकाल में दिन भर के किए हुए भले बुरे कार्यों का चिन्तन करना चाहिए। उनमें से अच्छे कार्यों की पुनरावृत्ति करने की कोशिश करनी चाहिए और बुरे कार्यों की आत्म निन्दा करके ऐसी कोशिश करनी चाहिए कि वे पुनः न हों।

१४३. उस परमात्मा के यथार्थ ज्ञान को तू उस तत्वदर्शी ज्ञानियों के पास जाकर समझ। उनको भली भांति दण्डवत् प्रणाम करने से, सेवा करने से, कपट छोड़कर सरलता पूर्वक प्रश्न करने से, वे परमात्मा के तत्व को भली-भांति जानने वाले ज्ञानी महात्मा, तुझे उस तत्व ज्ञान का उपदेश देंगे।

१४४. ध्यान करते समय भगवान की लीला के साथ उनके स्वरूप सौन्दर्य, माधुर्य को देख देखकर पलपल में मुग्ध होना चाहिए। भगवान की लीला का तत्व रहस्य भी साथ साथ समझना चाहिए। भगवान के गुण, प्रभाव, तत्व, रहस्य को समझकर उनका ध्यान करना चाहिए।

वैष्णव जन

वैष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीड पराई जाणे रे।
पर दुःखे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे॥
सकल लोक मां सहुने वंदे निन्दा न करे केनी रे।
वाच काछ मन निश्चल राखे, धन धन जननी तेनी रे॥
सम दृष्टि ने तृष्णा त्यागी पर स्त्री जेने मात रे।
जिह्वा थकी असत्य न बोले पर धन नव झाले हाथ रे॥
मोह माया व्यापे नहि जेने, दृढ़ वैराग्य जेना मनमा रे।
रामनाम शूँ ताली लागी सकल तीरथ तेना मनमा रे॥
वण लोभी ने कपट रहित छे काम क्रोध निवार्यां रे।
भणे नर सैये तेना दरसन करता कुल एकोतर तार्यां रे॥

O

कामना

कह रहा है, जो मुझे है, आज भगवन् मांगना।
पर नहीं, हे प्रभु! मुझे धन धान्य कंचन मांगना॥
लोक आदर मान की भी, कुछ मुझे इच्छा नहीं।
और क्या मुझको नहीं है, राज आसन मांगना॥
सिद्धता, वैराग्य, जप, तप, नियम, साधन आदि को।
यह नहीं कुछ भी, मुझे है पवित्र पावन मांगना।
प्रेम इतना दो कि देखूँ प्रेममय संसार को।
कामना है एक केवल, प्रेम जीवन मांगना॥

---

१२३. जिस प्रकार स्नानादि से प्रतिदिन शरीर स्वच्छ कर[illegible] आवश्यक है, उसी प्रकार भगवत् भजन रूपी स्नान मन को भी प्रतिदिन शुद्ध करना चाहिए।

१२४. अपनी वाणी से ही मनुष्य मान-अपमान, विजय-पराज[illegible] मित्रता-शत्रुता और सुख-दुख प्राप्त करता है।

१२५. सच्चा प्रेम माता के हृदय में और सच्ची शान्ति माता[illegible] चरणों में ही प्राप्त होती है।

१२६ भाई के प्रति पवित्र प्रेम और सभी आत्मा के दर्शन बहि[illegible] के ही हृदय में होते हैं।

१२७. माता का आशीर्वाद और बहिन का प्यार जीतने के लि[illegible] सदा प्रयत्नशील रहो।

१२८ जो मनुष्य आलस्य वश भलाई के स्वर्ण अवसर को हाथ में जाने देता है, वह उस मूर्ख के समान है, जो पास में जल-स्रोत रहने पर भी प्यास नहीं बुझाता।

१२९. मनुष्य अपने चरित्र की पवित्रता और चित्त की शुद्धत[illegible] का अभ्यास उसी समय तक कर सकता है जब तक कि वह सशक्त बना है। अतः मनुष्य को चाहिये कि वह वृद्धावस्था, बीमारी, मृत्यु आदि के पूर्व ही उसे जो कुछ शुभ कार्य करने हों, कर लेने चाहिए।

१३०. न्याय प्रियता, बड़ों का आदर, पवित्रता, चातुर्य, निःस[illegible] भावना, शुभ चिन्तन, निर्लोभ, अतिथि प्रेम और स्पष्ट [illegible] व्यवहार श्रेष्ठ मनुष्यों के लक्षण हैं।

१३१ मनुष्य को अपनी ओर खींचने का असली चुम्बक सच्चा प्रेम ही है।

१३२. चरित्र के बल पर शब्दों की कीमत बढ़ती है। अनीति के धर्मों में मनुष्य पतित हो जाता है।

१३३. एकता की भावना में महान शक्ति है, जो मनुष्य की कार्य शक्ति और उत्पादन शक्ति में सौ गुनी शक्ति बढ़ा देती है।

१३४. 'बुरे गाँव में बसना, दुष्ट राजा की सेवा करना, कुसमय भोजन करना, क्रोधान्मुख होना और दरिद्रता', ये छः बातें इस जीवन में नरक तुल्य हैं।

१३५. मनुष्य जीवन में ६ प्रकार की माताएँ होती हैं—राजा की स्त्री (रानी), सती स्त्री, मित्र की माता, पत्नी की माता और निज माता।

१३६. सन्तोष कडुआ तो है, परन्तु उसका फल मीठा होता है।

१३७. समस्त धर्मों के संस्थापक महान पुरुष हुए हैं। अतः किसी धर्म की निन्दा करना महापुरुषों की निन्दा करना है और महापुरुषों की निन्दा करना नर्क की ओर अग्रसर होना है।

१३८. वाणी के प्रभाव से ही व्यक्ति का व्यक्तित्व निखरता है। वाणी के ही कारण व्यक्ति इस दुनिया में प्रकाशित होता है।

नवाब और स्वार्थी लोगों के ही द्वारा चोर राजा अपने

१२३. जिस प्रकार स्नानादि से प्रतिदिन शरीर स्वच्छ करना आवश्यक है, उसी प्रकार भगवत् भजन रूपी स्नान से मन को भी प्रतिदिन शुद्ध करना चाहिए।

१२४. अपनी वाणी से ही मनुष्य मान-अपमान, विजय-पराजय, मित्रता-शत्रुता और सुख-दुख प्राप्त करता है।

१२५. सच्चा प्रेम माता के हृदय में और सच्ची शान्ति माता के चरणों में ही प्राप्त होती है।

१२६ भाई के प्रति पवित्र प्रेम और सची आत्मा के दर्शन बहिन के ही हृदय में होते हैं।

१२७. माता का आशीर्वाद और बहिन का प्यार जीतने के लिए सदा प्रयत्नशील रहो।

१२८. जो मनुष्य आलस्य वश भलाई के स्वर्ण अवसर को हाथ से जाने देता है, वह उस मूर्ख के समान है, जो पास में जल-स्रोत रहने पर भी प्यास नहीं बुझाता।

१२९. मनुष्य अपने चरित्र की पवित्रता और चित्त की शुद्धता का अभ्यास उसी समय तक कर सकता है जब तक कि वह भला चंगा है। अतः मनुष्य को चाहिये कि वह वृद्धावस्था, बीमारी, मृत्यु आदि के पूर्व ही उसे जो कुछ शुभ कार्य करने हों, कर लेने चाहिए।

१३०. न्याय प्रियता, बड़ों का आदर, पवित्रता, चातुर्य, निस्वार्थ भावना, शुभ चिन्तन, निर्लोभ, अतिथि प्रेम और दयालुता आदि भले मनुष्यों के लक्षण हैं।

नुष्य को अपनी ओर खींचने का असली चुम्बक सच्चा
म ही है।

चरित्र के पथ पर शब्दों की कोमत बढ़ती है। अनीति के
र्मों से मनुष्य पतित हो जाता है।

एकता की भावना में महान शक्ति है, जो मनुष्य की कार्य
शक्ति और उत्पादन शक्ति में सौ गुनी शक्ति बढ़ा
देती है।

'बुरे गाँव में बसना, दुष्ट राजा की सेवा करना, कुसमय
भोजन करना, क्रोधातुर होना और दरिद्रता', ये
छः बातें इस जीवन में नरक तुल्य हैं।

. मनुष्य जीवन में ६ प्रकार की माताएँ होती हैं—राजा की
स्त्री (रानी), सती स्त्री, मित्र की माता, पत्नी की माता
और निज माता।

. सन्तोष कड़ुआ तो है, परन्तु उसका फल मीठा होता है।

. समस्त धर्मों के संस्थापक महान पुरुष हुए हैं। अतः किसी
धर्म की निन्दा करना महापुरुषों की निन्दा करना है
और महापुरुषों की निन्दा करना नर्क की ओर अग्रसर
होना है।

८. वाणी के प्रभाव से ही व्यक्ति का व्यक्तित्व निखरता है।
वाणी के ही कारण व्यक्ति इस दुनिया में प्रकाशित
होता है।

) बेइमान और स्वार्थी लोगों के ही द्वारा चोर राजा अपने

१२३. जिस प्रकार स्नानादि से प्रतिदिन शरीर स्वच्छ करना आवश्यक है, उसी प्रकार भगवत् भजन रूपी स्नान से मन को भी प्रतिदिन शुद्ध करना चाहिए।

१२४. अपनी वाणी से ही मनुष्य मान-अपमान, विजय-पराजय, मित्रता-शत्रुता और सुख-दुख प्राप्त करता है।

१२५. सच्चा प्रेम माता के हृदय में और सच्ची शान्ति माता के चरणों में ही प्राप्त होती है।

१२६. भाई के प्रति पवित्र प्रेम और सच्ची आत्मा के दर्शन भगि के ही हृदय में होते हैं।

१२७. माता का आशीर्वाद और बहिन का प्यार जीतने के लि सदा प्रयत्नशील रहो।

१२८. जो मनुष्य आलस्य वश भलाई के स्वर्ण अवसर को ह से जाने देता है, वह उस मूर्ख के समान है, जो पास जल-स्रोत रहने पर भी प्यास नहीं बुझाता।

१२९. मनुष्य अपने चरित्र की पवित्रता और चित्त की शुद्धि का अभ्यास उसी समय तक कर सकता है जब तक वह भला चंगा है। अतः मनुष्य को चाहिये कि वृद्धावस्था, बीमारी, मृत्यु आदि के पूर्व ही सभी जो शुभ कार्य करने हों, कर लेने चाहिए।

१३०. न्याय प्रियता, बड़ों का आदर, पवित्रता, चातुर्य, निस्वार्थ भावना, शुभ चिन्तन, निर्लोभ, अतिथि प्रेम और दया आदि सभी मनुष्यों के लक्षण हैं।

१३१ मनुष्य को अपनी ओर खींचने का असली चुम्बक सच्चा प्रेम ही है।

१३२. चरित्र के बल पर शब्दों को कोमल बढ़ती है। अनीति के पैसों से मनुष्य पतित हो जाता है।

१३३. एकता की भावना में महान शक्ति है, जो मनुष्य की कार्य शक्ति और उत्पादन शक्ति में सौ गुनी शक्ति बढ़ा देती है।

१३४. 'बुरे गाँव में बसना, दुष्ट राजा की सेवा करना, कुसमय भोजन करना, क्रोधान्मुख होना और दरिद्रता', ये छः बातें इस जीवन में नरक तुल्य हैं।

१३५. मनुष्य जीवन में ६ प्रकार की मातायें होती हैं—राजा की स्त्री (रानी), सखी स्त्री, मित्र की माता, पत्नी की माता और निज माता।

१३६. सन्तोष कड़ुआ तो है, परन्तु उसका फल मीठा होता है।

१३७. समस्त धर्मों के संस्थापक महान पुरुष हुए हैं। अतः किसी धर्म की निन्दा करना महापुरुषों की निन्दा करना है और महापुरुषों की निन्दा करना तर्क की ओर अग्रसर होना है।

१३८. वाणी के प्रभाव से ही व्यक्ति का व्यक्तित्व निखरता है। वाणी के ही कारण व्यक्ति इस दुनिया में प्रकाशित होता है।

यान और स्वार्थी लोगों के ही द्वारा चोर राजा अपने

१२३. जिस प्रकार स्नानादि से प्रतिदिन शरीर स्वच्छ करना आवश्यक है, उसी प्रकार भगवत् भजन रूपी स्नान से मन को भी प्रतिदिन शुद्ध करना चाहिए।

१२४. अपनी वाणी से ही मनुष्य मान-अपमान, विजय-पराजय, मित्रता-शत्रुता और सुख-दुख प्राप्त करता है।

१२५. सच्चा प्रेम माता के हृदय में और सच्ची शान्ति माता के चरणों में ही प्राप्त होती है।

१२६. भाई के प्रति पवित्र प्रेम और सच्ची आत्मा के दर्शन बहिन के ही हृदय में होते हैं।

१२७. माता का आशीर्वाद और बहिन का प्यार जीतने के लिए सदा प्रयत्नशील रहो।

१२८. जो मनुष्य आलस्य वश भलाई के स्वर्ण अवसर को हाथ से जाने देता है, वह उस मूर्ख के समान है, जो पास में जल-श्रोत रहने पर भी प्यास नहीं बुझाता।

१२९. मनुष्य अपने चरित्र की पवित्रता और चित्त की शुद्धता का अभ्यास उसी समय तक कर सकता है जब तक कि वह भला चंगा है। अतः मनुष्य को चाहिये कि वह वृद्धावस्था, बीमारी, मृत्यु आदि के पूर्व ही उसे जो कुछ शुभ कार्य करने हों, कर लेने चाहिए।

१३०. न्याय प्रियता, बड़ों का आदर, पवित्रता, चातुर्य, निस्वार्थ भावना, शुभ चिन्तन, निर्लोभ, अतिथि प्रेम और दयालुता आदि भले मनुष्यों के लक्षण हैं।

ी अपनी ओर खींचने का असली चुम्बक मच्चा
है।

s पत्र पर शब्दों की कीमत पड़ती है। अनीति के
मनुष्य पतित हो जाता है।

ी भावना में महान शक्ति है, जो मनुष्य की कार्य
और उत्पादन शक्ति में सौ गुनी शक्ति पैदा
।

ीर में बसना, दुष्ट राजा की सेवा करना, कुसमय
 करना, क्रोधान्मुख होना और दरिद्रता', ये
ातें इस जीवन में नरक तुल्य हैं।

र जीवन में ६ प्रकार की माताएँ होती हैं—राजा की
 रानी), सती स्त्री, मित्र की माता, पत्नी की माता
 निज माता।

ोप कड़ुआ तो है, परन्तु उसका फल मीठा होता है।

ंत धर्मों के संस्थापक महान पुरुष हुए हैं। अतः किसी
 की निन्दा करना महापुरुषों की निन्दा करना है
र महापुरुषों की निन्दा करना नर्क की ओर अग्रसर
ना है।

ाणी के प्रभाव से ही व्यक्ति का व्यक्तित्व निखरता है।
ाणी के ही कारण व्यक्ति इस दुनिया में प्रकाशित
ोता है।

नवान और स्वार्थी लोगों के ही द्वारा घोर राजा अपने

१२३. जिस प्रकार स्नानादि से प्रतिदिन शरीर स्वच्छ करना आवश्यक है, उसी प्रकार भगवत् भजन रूपी स्नान से मन को भी प्रतिदिन शुद्ध करना चाहिए।

१२४. अपनी वाणी से ही मनुष्य मान-अपमान, विजय-पराजय, मित्रता-शत्रुता और सुख-दुख प्राप्त करता है।

१२५. सच्चा प्रेम माता के हृदय में और सच्ची शान्ति माता के चरणों में ही प्राप्त होती है।

१२६ भाई के प्रति पवित्र प्रेम और सच्ची आत्मा के दर्शन बहिन के ही हृदय में होते हैं।

१२७. माता का आशीर्वाद और बहिन का प्यार जीवन के सदा प्रयत्नशील रहो।

१२८. जो मनुष्य आलस्य वश भलाई के स्वर्ण अवसर को से जाने देता है, वह उस मूर्ख के समान है, जो पास जल-स्रोत रहने पर भी प्यास नहीं बुझाता।

१२९. मनुष्य अपने चरित्र की पवित्रता और चित्त की शु का अभ्यास उसी समय तक कर सकता है जब तक वह भला चंगा है। अतः मनुष्य को चाहिये कि वृद्धावस्था, बीमारी, मृत्यु आदि के पूर्व ही उसे जो शुभ कार्य करने हों, कर लेने चाहिए।

१३०. न्याय प्रियता, बड़ों का आदर, पवित्रता, चातुर्य, निर भावना, शुभ चिन्तन, निर्लोभ, अतिथि प्रेम और दया आदि भले मनुष्यों के लक्षण हैं।

१२१. मनुष्य की अपनी और औरों की असली पुरस्कार सच्चा प्रेम ही है।

१२२. चरित्र के पथ पर शब्दों की कीमत बढ़ती है। कुनीति के पैरों में मनुष्य पतित हो जाता है।

१२३. एकता की भावना में महान शक्ति है, जो मनुष्य की स्वयं शक्ति और उत्पादन शक्ति में सौ गुनी शक्ति बढ़ा देती है।

१२४. 'बुरे गाँव में बसना, दुष्ट राजा की सेवा करना, कुसमय भोजन करना, क्रोधान्मुख होना और दरिद्रता', ये छः बातें इस जीवन में नरक तुल्य हैं।

१२५. मनुष्य जीवन में ६ प्रकार की माताएँ होती हैं—राजा की स्त्री (रानी), सती स्त्री, मित्र की माता, पत्नी की माता और निज माता।

१२६. सन्तोष कड़ुआ तो है, परन्तु उसका फल मीठा होता है।

१२७. समस्त धर्मों के संस्थापक महान पुरुष हुए हैं। अतः किसी धर्म की निन्दा करना महापुरुषों की निन्दा करना है और महापुरुषों की निन्दा करना नर्क की ओर अग्रसर होना है।

१२८. वाणी के प्रभाव से ही व्यक्ति का व्यक्तित्व निखरता है। वाणी के ही कारण व्यक्ति इस दुनिया में प्रकाशित होता है।

...ीर स्वार्थी लोगों के ही द्वारा और राजा अपने

देश में पूजा जाता है। परन्तु विद्वान सर्वत्र पूजा जाता है। अतः ज्ञानवान बनने के लिए कोशिश करो।

१४०. साधु वेश में अनेक शैतान छिपे रहते हैं। ऐसे धूर्त ढोंगी साधुओं पर कतई विश्वास नहीं करना चाहिए। अन्यथा धन, जन और जीवन नष्ट हो जायेगा।

१४१ प्रत्येक व्यक्ति को समाज हितैषी बनना चाहिए। उसकी रक्षार्थ तन, मन, धन से सहयोग देना चाहिए।

१४२. रात्रि को शयनकाल में दिन भर के किए हुए भले बुरे कार्यों का चिन्तन करना चाहिए। उनमें से अच्छे कार्यों की पुनरावृत्ति करने की कोशिश करनी चाहिए और बुरे कार्यों की आत्म निन्दा करके ऐसी कोशिश करनी चाहिए कि वे पुनः न हों।

१४३. उस परमात्मा के यथार्थ ज्ञान को तू उन तत्वदर्शी ज्ञानियों के पास जाकर समझ। उनको भली भांति दण्डवत् प्रणाम करने से, सेवा करने से, कपट छोड़कर सरलता पूर्वक प्रश्न करने से, वे परमात्मा के तत्व को भली-भांति जानने वाले ज्ञानी महात्मा तुझे उस तत्व ज्ञान का उपदेश देंगे।

१४४. ध्यान करते समय भगवान की लीला के साथ उनके स्वरूप सौन्दर्य, माधुर्य को देख देखकर पल पल में मुग्ध होना चाहिए। भगवान की लीला का तत्व रहस्य भी साथ साथ समझना चाहिए। भगवान के गुण, प्रभाव, तत्व, रहस्य को समझकर उनका ध्यान करना चाहिए।

वैष्णव जन

वैष्णव जनतो तेने कहिये, जो पीड़ पराई जाणे रे।
पर दुःखे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे॥
सकल लोक मां सहुने वन्दे निन्दा न करे केनी रे।
वाच काछ मन निश्चल राखे, धन धन जननी तेनी रे॥
सम दृष्टि ने तृष्णा त्यागी पर स्त्री जेने मात रे।
जिह्वा थकी असत्य न बोले पर धन नाले हाथ रे॥
मोह माया व्यापे नहिं जेने, दृढ़ वैराग्य जेना मनमा रे।
रामनाम सूँ ताली लागी सकल तीरथ तेना मनमा रे॥
धन लोभी ने कपट रहित छे काम क्रोध निवार्या रे।
मणे नर सैये जेना दरसन करता कुल एकोत्तर तार्या रे॥

O

कामना

कह रहा हूँ, जो मुझे है, आज भगवन् मांगना।
पर नहीं, हे प्रभु! मुझे धन धान्य कंचन मांगना॥
लोक आदर मान की भी, कुछ मुझे इच्छा नहीं।
और क्या मुझको नहीं है, राज आसन मांगना॥
सिद्धता, वैराग्य, जप, तप, नियम, साधन आदि की।
वह नहीं कुछ भी, मुझे है पतित पावन मांगना।
प्रेम इतना दो कि देखूँ प्रेममय संसार को।
कामना है एक केवल, प्रेम जीवन मांगना॥

१४३.
के
कर
करने
ज्ञानी म

शान्तिः शान्तिः शान्तिः

१४४. ध्यान करते स
सौन्दर्य, माधुर्य
चाहिए। भगवान की
समझना चाहिए। भगवान
को समझकर उनका ध्यान करना

देश में पूजा जाता है। परन्तु विद्वान सर्वत्र पूजा जाता है। अतः ज्ञानवान बनने के लिए कोशिश करो।

१४०. साधु वेश में अनेक शैतान छिपे रहते हैं। ऐसे धूर्त ढोंगी साधुओं पर कतई विश्वास नहीं करना चाहिए। अन्यथा धन, जन और जीवन नष्ट हो जायेगा।

१४१ प्रत्येक व्यक्ति को समाज हितैषी बनना चाहिए। उसकी रक्षार्थ तन, मन, धन से सहयोग देना चाहिए।

१४२. रात्रि को शयनकाल में दिन भर के किए हुए भले बुरे कार्यों का चिन्तन करना चाहिए। उनमें से अच्छे कार्यों की पुनरावृत्ति करने की कोशिश करनी चाहिए और बुरे कार्यों की आत्म निन्दा करके ऐसी कोशिश करनी चाहिए कि वे पुनः न हों।

१४३. उस परमात्मा के यथार्थ ज्ञान को तू उस तत्वदर्शी ज्ञानियों के पास जाकर समझ। उनको भली भांति दंडवत् प्रणाम करने से, सेवा करने से, कपट छोड़कर सरलता पूर्वक प्रश्न करने से, वे परमात्मा के तत्व को भली-भांति जानने वाले ज्ञानी महात्मा, तुझे उस तत्व ज्ञान का उपदेश देंगे।

१४४. ध्यान करते समय भगवान की लीला के साथ उनके स्वरूप सौन्दर्य, माधुर्य को देख देखकर पलपल में मुग्ध होना चाहिए। भगवान की लीला का तत्व रहस्य भी साथ साथ समझना चाहिए। भगवान के गुण, प्रभाव, तत्व, रहस्य को समझकर उनका ध्यान करना चाहिए।

o

वैष्णव जन

वैष्णव जनतो तेने कहिये, जो पीड़ पराई जाणे रे ।
पर दुखे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे ॥
सकल लोक मां सहुने वन्दे निन्दा न करे केनी रे ।
वाच काछ मन निश्चल राखे, धन धन जननी तेनी रे ॥
सम दृष्टि ने तृष्णा त्यागी पर स्त्री जेने मात रे ।
जिह्वा थकी असत्य न बोले पर धन आले हाथ रे ॥
मोह माया व्यापे नहि जेने, दृढ़ वैराग्य जेना मनमा रे ।
रामनाम शूँ ताली लागी सकल तीरथ तेना मनमा रे ॥
धन लोभी ने कपट रहित छे काम क्रोध निवार्या रे ।
भणे नर सैये जेना दरसन करता कुल एकोत्तर तार्या रे ॥

O

कामना

कह रहा हूँ, जो मुझे है, आज भगवन् मांगना ।
पर नहीं, हे प्रभु ! मुझे धन धान्य कंचन मांगना ॥
लोक आदर मान की भी, कुछ मुझे इच्छा नहीं ।
और क्या मुझको नहीं है, राज आसन मांगना ॥
सिद्धता, वैराग्य, जप, तप, नियम, साधन आदि को ।
यह नहीं कुछ भी, मुझे है पवित्र पावन मांगना ।
प्रेम इतना दो कि देखूँ प्रेममय संसार को ।
कामना है एक केवल, प्रेम जीवन मांगना ॥

पाता हूँ, कि मुझ पर अब भी विषयों का अधिकार है, कभी-कभी तो बड़ी बुरी तरह से विषय वासना अपना प्रभुत्व प्रगट करती है और बाध्य करना चाहती है, अपनी गुलामी कराने के लिये, उस समय बड़ी ही व्यथा होती है, बस तुम्हारी कृपा ही उस समय काफी है. देखता हूँ तुम्हारी कृपा के द्वारा क्षण भर में ही उस वासना का विनाश हो जाता है, इतना होने पर भी मैं सर्वथा तुम्हारा ही नहीं बन पाता हूँ। मेरे सर्व शक्तिमान स्वामी, मालूम होता है कि मेरे प्रयत्न से कुछ नहीं होगा, अब तो तुम्हीं अपनी शक्ति से इस अधम दास को उठाकर हृदय से चिपकालो। यह आप जानते ही हो कि कभी-कभी तो मेरे प्राण तुम्हारे लिये छटपटाते ही हैं। बुद्धि का निर्णय भी यही होता है कि तुम्हारा ही बन जाने में मेरा कल्याण है, परन्तु दुष्ट मन नहीं मानता, मेरे प्राणों की छटपटाहट पर विचार कर, मेरे प्रभु, तुम्हीं अपनी कृपा से मुझे बचाओ, ऐसा न करो तो यही कह दो कि मुझे न तो कभी कोई याद हो और न मैं बार-बार प्रार्थना करके इसके लिये तुम्हें सताऊँ। आप जो करो जैसा करो जब करो मुझे किसी भी हालत में कैसे भी रखो मैं उसी में सन्तुष्ट हूँ। यह सब तुम्हारी ही कृपा है। तुम्हारे अनजान में कुछ नहीं हो रहा है। आप सोच समझकर ही मुझे इस स्थिति में रख रहे हो और सचमुच इसी में कल्याण है।

प्राणधन

प्राणधन चतुर शिरोमणि श्याम सुन्दर, मेरे ये दुखिया प्राण तुम्हारे वियोग में दिन-रात छटपटाते रहते हैं। तुम्हारे दर्शन के बिना हृदय प्रतिक्षण विदीर्ण हो रहा है तथा जीवन अत्यन्त दुःखमय हो गया है। अभिमिलन की अत्यन्त दारुण ज्वाला में देह, इन्द्रिय, मन सभी दग्ध हुए जा रहे हैं, रात दिन कलपते और विलाप करते बीतता है। रात्रि को नींद ही नहीं आती, इसलिये स्वप्न में होने वाले दर्शन भी असम्भव हो गये हैं। बताओ फिर यह मन कैसे सुखी हो! मनमोहन अब देर न करो, हृदय में तनिक दया को स्थान दो और अपने दर्शन देकर हृदय की अग्नि को शान्त कर दो।

प्रेम

परम प्रेम के दिव्य रस में डूबा हुआ प्रेमानन्द मग्न प्रेमी सर्वत्र अपने प्रेममय रसमय प्रियतम को ही देखता है। उसे कहीं दूसरी वस्तु दिखती ही नहीं, ऐसी स्थिति को प्रेम कहते हैं।

भक्त समागम

अनन्य भक्त गण जब इकट्ठे होकर अपने प्राण स्वरूप प्रियतम की चर्चा करते हैं, तो उनका प्रेम सागर उमड़ पड़ता है। तब वे चेष्टा करने पर भी नहीं बोल पाते। उनके कंठ रुक जाते हैं, शरीर पुलकित हो जाता है। रोम-रोम से प्रेम की किरण-धारायें निकल कर उस स्थान में निर्मल प्रेम-ज्योति

पाता हूँ, कि मुझ पर अब भी विषयों का अधिकार है, कभी-कभी तो बड़ी बुरी तरह से विषय वासना अपना प्रभुत्व प्रगट करती और बाध्य करना चाहती है, अपनी गुलामी कराने के लिये, उस समय बड़ी ही व्यथा होती है, बस तुम्हारी कृपा ही उस समय काम आती है देखता हूँ तुम्हारी कृपा के द्वारा क्षण भर में ही उस वासना का विनाश हो जाता है, इतना होने पर भी मैं सर्वथा तुम्हारा ही नहीं बन पाता हूँ। मेरे सर्व शक्तिमान स्वामी, मालूम होता है कि मेरे प्रयत्न से कुछ नहीं होगा, अब तो तुम्हीं अपनी शक्ति से इस अधम दास को उठाकर हृदय से चिपकालो। यह आप जानते ही हो कि कभी-कभी तो मेरे प्राण तुम्हारे लिये छटपटाते ही हैं। बुद्धि का निर्णय भी यही होता है कि तुम्हारा ही बन जाने में मेरा कल्याण है, परन्तु दुष्ट मन नहीं मानता, मेरे प्राणों की छटपटाहट पर विचार कर, मेरे प्रभु, तुम्हीं अपनी कृपा से मुझे बचाओ, ऐसा न करो तो यही कह दो कि मुझे न तो कभी कोई चाह हो और न मैं बार-बार प्रार्थना करके उसके लिये तुम्हें सताऊँ। आप जो करो जैसा करो जब करो मुझे किसी भी हालत में कैसे भी रखो मैं उसी में सन्तुष्ट हूँ। यह सब तुम्हारी ही कृपा है। तुम्हारे अनजान में कुछ नहीं हो रहा है। आप सोच समझकर ही मुझे इस स्थिति में रखे हुए हो और सचमुच इसी में कल्याण है।

फैला देते हैं। वहाँ का वातावरण अत्यन्त विशुद्ध और प्रेममय हो जाता है। उस समय वे भक्तगण प्रेम विह्वल होकर आँखों से प्रेम के आंसुओं की धारा बहाते हुए परमानन्द में मग्न हो जाते हैं। यह स्थिति बहुत ही दुर्लभ और परम पवित्र होती है। जिन भागवतों को यह अवस्था प्राप्त हो जाती है, उन सबके कुल पवित्र होते ही हैं।

मृत्यु

यदि मृत्यु न होती, तो संसार भयानक हो जाता। मृत्यु संसार को रमणीक बनाती है। मृत्यु के कारण ही ईश्वर में प्रेम है, यदि हम अमर होते, तो एक-दूसरे को पूछते भी नहीं। मृत्यु से ही जीवन की कीमत आंकी जाती है। मरते समय जो रोता है, उसका जीवन असफल और जो हँसता है, उसका जीवन सफल माना जाता है, कृतार्थ समझा जाता है। मरण यानी नव जीवन। भक्त मरण यानी आनन्द दर्शन। मरण यानी पर्वणी। मृत्यु यानी प्रियतम की गोद में जाना।

सब प्रकार की शुभ इच्छाओं को पूर्ण करने वाली प्रार्थना

(१) हे सर्वगुणैश्वर्य सम्पन्न भगवान! आपकी कृपा से हम महान ऐश्वर्य, विपुल सम्पत्ति एवं सब प्रकार की समृद्धियों से सम्पन्न होकर दीन दुखियों की सहायता करने में समर्थ होवें।

(२) हे दीनदयाल प्रभो! आप हमें दिन प्रतिदिन धर्म
: नीति से द्रव्य सम्पादन करने की स्फूर्ति एवं शक्ति प्रदान
जये, तथा प्राप्त द्रव्य का परोपकार अर्थात् प्राणी मात्र के
। कल्याण करने में सदुपयोग हो।

(३) हे भगवन्! हमें सभी जगह विजय प्राप्त हो, आपकी
से हमारी सब शुभ कामनाएँ पूर्ण हों और हमारे मार्ग में
वाली सब प्रकार की विघ्न बाधाएँ दूर होकर हमारे सब शुभ
सिद्ध हों।

(४) हे पिता! आप हमारे परम पिता हो, परम देव
स्वामियों के स्वामी हो, आप हमें शुद्ध बुद्धि, श्रेष्ठ बल,
। पुरुषार्थ एवं शाश्वत सुख प्रदान करें। हम जो कुछ माँगेंगे
पही से माँगेंगे, क्योंकि सब सुखों के दाता आपही हैं।
केवल आपका ही आश्रय है। इसलिये आप ऐसी कृपा करें
हम आपको छोड़कर अन्य किसी के द्वार पर न जावें। हमें
विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना अवश्य स्वीकार
गे।

(५) हे दयामय भगवान! आप अनन्त कल्याण युक्त
ों से परिपूर्ण हैं। आप हमारी वाणी को पवित्र, बुद्धि को
ल एवं मन को स्थिर कीजिये। हमारे संकल्प और आचरण
: हों।

(६) हे परमात्मा! आप सब प्रकार के भय और विघ्नों
हमारी रक्षा कीजिये। हमारी शारीरिक और मानसिक
कयों को बढ़ाइये। हमारी श्रद्धा एवं आत्म विश्वास को दृढ़
जिये। हमारे मन एवं विचारों को शुद्ध एवं शांत कीजिये।

(७) हे अनन्त शक्तिमान! आप हमारी आत्मा में अपना अनन्त अमोघबल एवं सामर्थ्य प्रगट कीजिये, जिससे हम सब प्रकार की शारीरिक एवं मानसिक व्याधियों तथा दुःख आपत्तियों से मुक्त होकर दूसरों को मुक्त करने में समर्थ हों।

(८) हे मंगलमय! आप हमारे सब प्रकार के दुर्गुणों तथा काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, संशय, चिन्ता, शोक आदि विकारों को दूर कीजिये, जिससे हम निर्भय होकर अपना जीवन सुख-शांति मय व्यतीत करते हुए आपके गुण और महिमा का गान नित्य करते रहें।

(९) हे दयासागर! आप हमारी आत्मिक उन्नति के मार्ग की रुकावटों को दूरकर हमारे ध्येय की पूर्ति में सफलता प्रदान कीजिये।

(१०) हे आनन्दघन! आप हम पर ऐसी दया कीजिये कि हमारा अति चंचल और चपल मन अनेक विषय संबंधी विचारों के जाल में भटकना छोड़कर सदा आपके प्रेम-सुधा-सागर में निमग्न होकर परमानन्ददायी पीयूष पान करता रहे। हम आपको क्षण भर भी विस्मृत न करके सदा आपके प्रकाश मय एवं आनन्दमय दिव्य आत्म स्वरूप का दर्शन करते रहें और हम उस स्वरूप में तन्मय तथा तल्लीन होकर महा परमानन्द में निमग्न रहें।

(११) हे दयासिन्धु भगवन्! हम यह पूर्णतया निश्चित रूप से जानते हैं, कि आपकी कृपा होने पर ऐसा कोई गुण नहीं है जो पूर्ण न हो सके। इस जगत में कोई भी ऐसी दुर्लभ वस्तु नहीं है, जो प्राप्त न हो सके। ऐसा कोई भी कार्य नहीं है,

न सकें तथा आपकी कृपा बिना हमारी नहीं लाखों प्रयत्न करने पर भी किसी की कोई इच्छा पूर्ण नहीं होती। इसलिये हम पर सदा दया की दृष्टि रखें, तभी हमारी उपयुक्त शुभ इच्छायें पूर्ण होंगी। यही हमारी अन्तिम प्रार्थना है।

आत्मिक उन्नति की प्रार्थना

हे परम पवित्र कृपालु परमेश्वर! हम आपके शरणागत हैं, अन्तःकरण से अभिवादन करते हैं, हमारा जीवन आपके हाथ में है। सब प्राणियों पर आपकी सम दृष्टि है, इसलिये हम भी सब प्राणियों से समान भाव तथा बन्धु भाव का व्यवहार करें, किसी से वैर-द्वेष तथा ईर्ष्या-भाव न रखें। जो हमसे द्वेष और वैर करे, उसे हम क्षमा करें। तभी हम आपकी कृपा तथा प्रीति के पात्र बनेंगे। हमें क्षमा करके ऐसी बुद्धि प्रदान कीजिये कि हम भूल से भी दया, क्षमा तथा साधन का कदापि त्याग न करें।

हे दयामय पिता! हमारी आत्मा को बल प्रदान कीजिये कि काम, क्रोध, लोभ मोह, मान, कषाय (राग-द्वेष) आदि मनोविकारों के वशीभूत न हों। इस प्रकार हम पर कृपा करें कि हमारा चित्त सदा शांत रहे और हम आत्मोन्नति के मार्ग में प्रवृत्त रहें। हे प्रभु! यह सब आपके हाथ में है। जब हमारा यत्न और आपका आशीर्वाद होगा, तभी हमारी दुर्वासनायें नष्ट होंगी और मनोवृत्ति पवित्र होगी, इसलिये हम आपके प्रसाद और आशीर्वाद की सहायता मांगते हैं, जिससे हमारा कल्याण हो।

(७) हे अनन्त शक्तिमान ! आप हमारी आत्मा में अन
अनन्त अमोघबल एवं सामर्थ प्रगट कीजिये, जिससे हम स
सब प्रकार की शारीरिक एवं मानसिक व्याधियों तथा दु
आपत्तियों से मुक्त होकर दूसरों को मुक्त करने में समर्थ हों।

(८) हे मंगलमय ! आप हमारे सब प्रकार के दुर्गु
तथा काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, संशय, चिन्ता, शोक आ
विकारों को दूर कीजिये, जिससे हम निर्भय होकर अप
जीवन सुख-शांति मय व्यतीत करते हुए आपके गुण और महि
का गान नित्य करते रहें।

(९) हे दयासागर ! आप हमारी आत्मिक उन्नति के म
की रुकावटों को दूरकर हमारे ध्येय की पूर्ति में सफल
प्रदान कीजिये।

(१०) हे आनन्दघन ! आप हम पर ऐसी दया कीजि
कि हमारा अति चंचल और चपल मन अनेक विषय सं
विचारों के जाल में भटकना छोड़कर सदा आपके प्रेम-सुधा-साग
में निमग्न होकर परमानन्ददायी पीयूष पान करता रहे
हम आपको क्षण भर भी विस्मृत न करके सदा आपके प्रका
मय एवं आनन्दमय दिव्य आत्म स्वरूप का दर्शन करते र
और हम उस स्वरूप में तन्मय तथा तल्लीन होकर स
परमानन्द में निमग्न रहें।

(११) हे दयासिन्धु भगवन्त ! हम यह पूर्णतया निश्च
रूप से जानते हैं, कि आपकी कृपा होने पर ऐसी कोई शुभ इच्छा
नहीं है जो पूर्ण न हो सके। इस जगत में कोई भी ऐसी दुर्लभ वस्
नहीं है, जो प्राप्त न हो सके। ऐसा कोई भी कार्य नहीं है, जो

कर न सकें तथा आपकी दया बिना हजारों नहीं लाखों प्रयत्न करने पर भी किसी की कोई इच्छा पूर्ण नहीं होती। इसलिये आप हम पर सदा दया की दृष्टि रखें, तभी हमारी उपयुक्त सब शुभ इच्छाएँ पूर्ण होंगी। यही हमारी अन्तिम प्रार्थना है।

आत्मिक उन्नति की प्रार्थना

हे परम पवित्र कृपालु परमेश्वर! हम आपके शरणागत होकर सप्रेम, अन्तःकरण से अभिवादन करते हैं, हमारा जीवन आपके हाथ में है। सब प्राणियों पर आपकी सम दृष्टि है, इसलिये हम भी सब प्राणियों से समान भाव तथा बन्धु भाव का व्यवहार करें, किसी से वैर-द्वेष तथा ईर्ष्या-भाव न रखें। जो हमसे द्वेष और वैर करे, उसे हम क्षमा करें। तभी हम आपकी कृपा तथा प्रीति के पात्र बनेंगे। हमें दया करके ऐसी सद्बुद्धि प्रदान कीजिये कि हम भूल से भी दया, क्षमा तथा सत्य वचन का कदापि त्याग न करें।

हे दयामय पिता! हमारी आत्मा को बल प्रदान कीजिये कि हम काम, क्रोध, लोभ मोह, मान, कषाय (राग-द्वेष) आदि प्रबल मनोविकारों के वशीभूत न हों। इनका प्रभाव हम पर न हो। हमारा चित्त सदा शांत रहे और हम आत्मोन्नति के साधन में प्रवृत्त रहें। हे प्रभु! यह सब आपके हाथ में है। जब हमारा यत्न और आपका आशीर्वाद होगा, तभी हमारी दुर्वासनाएँ नष्ट होंगी और मनोवृत्ति पवित्र होगी, इसलिये हम नतशिर आपके प्रसाद और आशीर्वाद की सहायता माँगते हैं, जिससे हमारा कल्याण हो।